बाल विनोद-वाटिका का सोलहवाँ पुष्प

विचित्र वीर

अर्थात्

डौन क्विक्ज़ोटका संक्षिप्त वृत्तांत

लेखक

जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

प्रकाशक और विक्रेता

लखनऊ

प्रथमावृत्ति

सजिल्द १)] सं० १६८६ वि० [अजिल्द ॥)

प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ



मुद्रक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

श्रीयुत घनश्यामदासजी बिडला

कलकत्ता

प्रिय बिड़लाजी,

आप हास्यप्रिय हैं और सदा हँसना पसंद करते हैं, इसलिये हँसानेके लिये यह आपके कर-कमलोंमें रखता हूँ।

शुभैषी

पूस सुदी ५
सं० १९८३

जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी

विचित्र वीर



प० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी

ga Fine Art Press, Lucknow

लेखकका वक्तव्य

हिंदीससारमें आजकल हास्यरसका बाजार बेतरह गर्म है। इसके लेखकों और पाठकोंकी सख्या दिन पर दिन बढती जाती है, यह आनदकी बात है। पर हास्यरसकी अवस्था कैसी हास्यजनक हो रही है, इसपर किसी हास्यप्रेमीका ध्यान नही, यह खेदकी बात है। हास, परिहास हँसी खेल नही कि जो चाहे वही इसमें सफलता प्राप्त कर ले। इसमे वही सफल हो सकता है, जो अनुभवी, सहृदय, सुरसिक, सदानद है और जिसका अपनी भाषापर पूर्ण अधिकार है। हिंदीमें जिस शैलीका हास परिहास होता है, वह अधिकाश दूषित, घृणित और कुरुचिपूर्ण है। गाली गलौज या अश्लील आक्षेप या आक्रमण परिहास नही है। यह उससे कोसो दूर है। हास्यरसका उद्देश्य बडा मधुर और ऊँचा है। पर अनधिकारियोंके हाथ पडकर इसकी मिट्टी पलीद हो रही है। खैर, इन सब बातोंकी आलोचना अलग ही एक स्वतत्र पुस्तकमें करनेका विचार है, जो समय सापेक्ष है।

अभी तो यही कहना है कि प्रस्तुत पुस्तक सर वेनटिसके

डौन किक्जोटका सारांश है। हिंदीके पाठकोंको सुरुचिपूर्ण हास-परिहासका रसास्वादन करानेके उद्देश्यसे ही इसका इत्र अँगरेजीसे हिंदीमें निकाला है, इससे यह भी मालूम हो जायगा कि योरपवाले कैसा हास परिहास करते हैं। इसमें कुरुचिपूर्ण, अश्लील और उद्वेगजनक भाव नहीं है और न किसीपर घृणित आक्षेप ही है। जो कुछ है वह अत्यंत निर्गेह, निर्दोष और निर्मल है।

डीन स्वीफ्ट भी अँगरेजी भाषाका सुप्रसिद्ध हास्यरसाचार्य माना जाता है। उसके विख्यात 'गलीवर्स ट्रवल्स'का उल्था मैंने विचित्र-विचरणके नामसे किया है। उसका द्वितीय संस्करण भी हो चुका है। उसमे व्यक्तिगत आक्षेपों और कटाक्षोंकी भरमार है, पर इसमें वह सब बातें नहीं हैं। इसीसे स्पेनिश भाषा के सिवा अँगरेजीमें भी इसका बड़ा आदर है। इसके छोटे बड़े कई संस्करण हो चुके हैं, बस यही इसके लोकप्रिय होनेका पुष्ट प्रमाण है।

यह बहुत बड़ी पुस्तक है। पूरा उल्था करने में बहुत समय लगता। इसलिये यह सारांश ही पाठकोंके आगे रखता हूँ। आशा है, इससे पाठकोंका मनोरंजन तथा रुचिपरिवर्तन होगा। रुचिकर होनेसे पूरी पुस्तक भी भाषान्तरित हो सकती है।

पाठकोंके सुबीतेके लिये स्पेनिश नामोंका हिंदी रूपांतर कर दिया है। यथा—

Don Quixotes	=	किज्योति
Sancho Panza	=	सनकूराव
Dulcinea	=	दर्शनीया
Dorothia	=	दुरतिया
Rosinante	=	वायुवेग

मलेपुर (मुंगेर)
पूस सुदी ५, सं० १९८३ } विनीत
जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी

बाल विनोद-वाटिका की कुछ पुस्तकें

गधे की कहानी

लेखक ने यह 'गधे की कहानी, लिखकर बाल-साहित्य के एक मुख्य अंग की पूर्ति की है। गधे ने अपनी कथा बड़े रोचक ढंग से कही है। भापा खूब सरल और मुहाविरेदार है। गधे ने अपनी भापा में मानव-समाज पर कैसी हास्य जनक आलोचनाएँ की हैं, यह देखने ही योग्य है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

नटखट पाँडे

एक नटखट लड़के की आत्म कथा। आदि से अंत तक एक भी पृष्ठ ऐसा नहीं, जो नीरस और रूखा हो। एक-एक शब्द में हास्य रस भरा हुआ है। सारी कहानी इतनी अनूठी और दिलचस्प है कि जिस लड़के ने किताब खोलने की क़सम खा ली हो, वह भी इसे समाप्त किए बिना नहीं रह सकता। कितने ही प्रसंग तो ऐसे हैं, जहाँ मारे हँसी के पेट में बल पड़ जायँगे। पुस्तक में कुल १४ तिरंगे हाफ़टोन चित्र हैं, जिनसे उसकी सुंदरता और भी बढ़ गई है। मूल्य १॥), २)

परोपकारी हातिम

भारत में जैसे कर्ण और हरिश्चंद्र दान-वीर और वचन के सच्चे महात्मा हुए हैं, वैसे ही दानी और सत्यवादी पुरुष ईरान में हातिम हुआ है। उसकी कथा इतनी मनोरंजक है कि संसार की ऐसी कोई भापा नहीं, जिसमें उसका अनुवाद न हो चुका हो। उसी हातिम का यह चरित्र बालकों के लिये बहुत ही सरल और सुबोध भापा में लिखा गया है। कथा इतनी रोचक है कि अलिफ़-लैला भी इसके सामने मात है। इसके साथ ही चरित्र पर उसका बहुत अच्छा असर पड़ता है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

संचालक——गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

प्रणेताका परिचय

डौन किक्जोटका प्रणेता स्पेनका निवासी और अपने समयका बडा प्रतिभाशाली पुरुष था। दिल्लीका मुगल सम्राट् अकबर और वह दोनों समसामयिक कहे जा सकते हैं। स्पेनकी विजय वैजयंती उस समय अमेरिकातक फहरा रही थी।

इसका बाप सफरी डॉक्टर था, पर उसकी आर्थिक अवस्था अच्छी न थी। इसलिये अपने पुत्रको विश्वविद्यालयमें न पढा सका। पर सर वेनटिसको लडकपनसे ही पुस्तकें पढनेका रोग था। जो पुस्तक हाथ लगती, उसे ही पढ डालता। वह वीरगाथाएँ और वीरोंके दुस्साहसिक कार्यो का वर्णन बडे ही चावसे पढता था। उसने अपने पिताके साथ सारे स्पेन तथा और और देशोंकी खूब सैर की थी। इससे उसे ससारका अच्छा अनुभव हो गया था। देहात और देहाती सरायोंकी तो कोई बात उससे छिपी न थी।

फौजमें भर्ती हो लिपातोकी लडाईमें इसने खासा नाम पाया। सेनापतिने स्वय जाकर इसे बधाई दी थी, पाँच वर्ष बाद यह स्पेन लौट रहा था, पर मूरोंने रास्तेमें ही इसे पकड़ कैद कर लिया। उस समय उत्तर आफ्रिकामें मुसलमानोंकी हुकूमत

थी। वह लोग क्रिस्तानोंको पाते ही पकडकर गुलाम बना लेते थे। सर वेनटिस भी अलजीरियामे गुलाम बना रखा गया। पाँच साल बाद कुछ दे लेकर वह छूटा और स्पेन पहुँचा। वहाँ उसने नाटक लिखकर गुजारा करना चाहा, पर सफलता न हुई। और भी बहुतेरे काम किये, पर कही कुछ लाभ न हुआ। अतमें टैक्स कलक्टरके पदपर नियुक्त हुआ, पर वहाँ भी भाग्यने साथ न दिया। बात यह हुई कि वहाँ के प्रभाव-शाली मनुष्य टैक्स देना पसद नहीं करते, पर यह सबसे पाई-पाई वसूल कर लेता था, इससे वह लोग चिढ़ गये। नतीजा यह हुआ कि यह बेकुसूर किसी बहाने जेल भेज दिया गया। यह बड़ा दबग और साहसी था। आफतोंसे कभी घबराता न था। उस समय इसकी उम्र पचास सालकी थी। पास एक कौडी नही, उसपर जेल, वह भी विना अपराध। ऐसी ही अवस्थामें उसने "डौन किक्जोट" लिखना आरभ कर दिया। सन् १६०५ ई० मे पहलेपहल यह छपा और छपते ही लोकप्रिय हो गया। इसके बाद कविता, उपन्यास जो कुछ लिखा सबमे उसे पूरी सफलता हुई।

उन दिनों बहादुरोंकी फालतू मनगढत कहानियाँ पढनेकी बडी चाल थी। नवयुवकोंपर इनका बडा बुरा प्रभाव पडता था। इनका प्रचार रोकनेके लिये ही इसने डौन किक्जोटकी रचना की। इसमें हास परिहास, व्यग्यके अतिरिक्त स्पेनवालोंके

चरित्र, दिनचर्या तथा मनुष्य स्वभावका सुदर वर्णन है। अपना अनुभव शब्दों द्वारा कैसी उत्तमतासे प्रकट किया है कि देखकर आश्चर्य होता है। हास परिहासको अत तक बड़ी चतुरतासे निवाहा है। इसमे विशेषता यही है कि कहीं किसी पर न व्यक्तिगत आक्रमण है और न आक्षेप। जो कुछ है वह मीठी चुटकियाँ हैं—चोटें नहीं। इसके पात्रोंपर भी प्रेम हुए विना नहीं रहता। बहादुर सवार, पादड़ी, डोरोथिया सबके ऊपर सनकोपजा इसका पुष्ट प्रमाण है। पिछलेका चरित्र चित्रण करने मे सर वेनटिसने गजब कर डाला है। दुष्ट पात्रोंपर भी घृणा न हो आप ही आप दयाका उद्रेक हो उठता है। वह उनकी कमजोरियाँ छिपाता नही,पर प्राय सब मनुष्योंके हृदयमें जो अच्छा भाव रहता है उसे वह अनुभव करा देता है।

डौन किक्जोटमे हास परिहासकी पूर्ण मात्रा होने पर भी वह ज्ञानका भडार है। इसीसे अँगरेज लोग बाइबिलका जितना आदर करते, उतना ही स्पेन वासी इसका करते हैं। बातचीतमें यह कहावतोंकी तरह वहाँ उद्धृत किया जाता है। इसकी उपयोगिता देखकर ही स्पेनकी सरकारने स्पेन वासी बालकोंके लिये डौन किक्जोटका पढना अनिवार्य कर दिया है। बस इसीसे समझ लेना चाहिये कि इसका कितना महत्त्व है।

दय से सूर्यास्त तक और सूर्यास्त से सूर्योदय तक पढा करता था। हाँ गाँव के हज्जाम और पाण्डियोंसे जब इसी विषय पर तर्क-वितर्क होता तब पढना अवश्य ही छूट जाता था। इस तरह किताबें पढने के कारण उसे सोने और आराम करने का मौका बहुत कम मिलता था। नतीजा यह हुआ कि थोडे ही दिनों-में उसका दिमाग बिगड गया। जो कुछ वह पढता वही दिन-रात सोचता था। उसके दिमागमें वही जादूगरी, युद्ध, द्वद्वयुद्ध, ललकारें, घाव, राजकुमारियोंका प्रेम, तूफान और असभव फालतू बातें चक्कर काटा करती थी। यह सब बाते उसके मनमें ऐसी बैठ गयीं कि वह इन्हें बिलकुल सत्य मानने लग गया था। वह समझता था कि इन किताबोंके सिवा ससारमें ऐसा कोई इतिहास ही नही जिस पर इतना विश्वास किया जा सके।

मुख्तसर हाल यह है कि उस पर ऐसी सनक सवार हुई कि वह खुद ही बहादुर सवार बनना ठानकर जल्द ही सफरके लिये तैयार हो गया। हथियारों और घोडेकी कमी उसके पास थी ही नहीं। उसने किताबोंमें जैसा जो कुछ पढा उसके अनुसार ही सब काम करनेका पक्का इरादा कर लिया। सब विपत्तियोंको झेलने और सबके कष्टोंको दूर करने का मसूबा कर डाला। उस बेचारेने यह भी समझ लिया कि मैं अपने बाहुबलसे अरबका बादशाह हो गया हूँ।

बीसवें वर्षमें भी पाँव नहीं रखा था। इन दोनोंके सिवा एक छोकरा भी था जो खेतों और बाजारका काम करता था। वह घोड़ेकी साईसी भी करता और घास भी खोदता था। हमारा चरित्रनायक अपनी उम्रके पचास वर्ष पूरे कर रहा था। इसके शरीर की बनावट बड़ी मजबूत थी। देह पर कहीं एक छटाँक फ़ालतू मास न था। मुँह लंबा तथा पतला था। वह तेज खिलाड़ी था और खूब सवेरे सोकर उठता था। उसके नाम जानने की अभी ऐसी कुछ जरूरत नहीं। आगे चलकर आपही मालूम हो जायगा।

हमारा चरित्रनायक अवकाश मिलने पर ऐसी ही पुस्तकें पढ़ता जिनमें शूरता और दुस्साहसिक कार्यों का वर्णन होता था। उसे प्राय अवकाश ही रहता और इन पुस्तकोंको बड़े उत्साह और चावसे पढ़ता था। इनमें वह ऐसा गड़ जाता कि शिकार खेलना क्या, घरका काम काज भी भूल जाता था। अपनी बहुत-सी जमीन जायदाद बेचकर उसने बहादुर सवारोंकी कहानियोंकी किताबें खरीदी थीं। ऐसी किताबें जहाँ मिलती, वहाँ से घर ले आता था। बहादुर सवार से मतलब उन सूरमाओं से है, जो शानदार लड़ाइयों और गौरवयुक्त दुस्साहसिक कार्योंकी खोजमें तमाम घूमा करते थे। ऐसे ही अश्वारोही वीरोंकी कल्पित कहानियाँ यह सूर्यो-

दय से सूर्यास्त तक और सूर्यास्त से सूर्योदय तक पढ़ा करता था। हाँ गाँव के हज्जाम और पादड़ियोंसे जब इसी विषय पर तर्क-वितर्क होता तब पढ़ना अवश्य ही छूट जाता था। इस तरह किताबें पढ़ने के कारण उसे सोने और आराम करने का मौक़ा बहुत कम मिलता था। नतीजा यह हुआ कि थोड़े ही दिनों-में उसका दिमाग बिगड़ गया। जो कुछ वह पढ़ता वही दिन-रात सोचता था। उसके दिमागमें वही जादूगरी, युद्ध, द्वद्वयुद्ध, ललकारें, घाव, राजकुमारियोंका प्रेम, तूफान और असभव फालतू बातें चक्कर काटा करती थी। यह सब बातें उसके मनमें ऐसी बैठ गयीं कि वह इन्हें बिलकुल सत्य मानने लग गया था। वह समझता था कि इन किताबोंके सिवा संसारमें ऐसा कोई इतिहास ही नहीं जिस पर इतना विश्वास किया जा सके।

मुख्तसर हाल यह है कि उस पर ऐसी सनक सवार हुई कि वह खुद ही बहादुर सवार बनना ठानकर जल्द ही सफ़रके लिये तैयार हो गया। हथियारों और घोड़ेकी कमी उसके पास थी ही नहीं। उसने किताबोंमें जैसा जो कुछ पढ़ा उसके अनुसार ही सब काम करनेका पक्का इरादा कर लिया। सब विपत्तियोंको झेलने और सबके कष्टोंको दूर करने का मसूबा कर डाला। उस बेचारेने यह भी समझ लिया कि मैं अपने बाहुबलसे अरबका बादशाह हो गया हूँ।

पहला काम उसने बस यही किया कि अपने लकड़दादेके समयका जग लगा हुआ एक बख्तर ढूँढ निकाला। जहाँ तक हो सका उसे साफ कर डाला। फिर अपने घोड़ेरामका मुलाहिजा किया। उसकी हड्डियाँ अलग-अलग गिनी जा सकती थीं, पर उसने समझ लिया कि इन्द्र का श्यामकर्ण भी इसके आगे कुछ नहीं है। इस घोडेका क्या उपयुक्त नाम हो सकता है इसी विचारमें चार दिन बीत गये। वह सोचता था कि ऐसे सुंदर घोडेका नाम भी सुंदर ही होना चाहिए, जिसमें नामसे ही मालूम हो जाय कि उसका नया जीवन कैसा गौरवमय है। बहुत काट-छाँट के बाद घोडेका नाम हुआ "वायुवेग"। इस नाममें मधुरता और भयंकरता दोनोंका क्या ही अच्छा मेल है।

घोडेका नाम रख उसने अपने नामकरणका विचार किया। इसमे भी आठ दिन लग गये। बहुत सोच विचारके बाद उसने अपना नाम रखा "किंज्योति" जिसमे मालूम हो कि वह किस उत्तम देशका है और जिस देशका वह है उसका भी गौरव बढे, इसलिये उसने अपना पूरा नाम रखा "बहादुर किंज्योति लामनचावाला।"

बख्तर की सफ़ाई हो गयी, अपना तथा घोड़ेका नाम भी रखा जा चुका। अब कसर रही एक राजकुमारीकी

जिस पर वह आशिक हो जाता। क्योंकि बहादुर सवार, राजकुमारी के विना वैसा ही होता है जैसा विना पत्तो और फलोंका वृक्ष। उसने सोचा कि अगर मेरी भेंट किसी दैत्यसे हो गयी जैसा कि बहादुर सवारोंकी अकसर हो जाया करती है और मैंने युद्धमें उसे जीत भी लिया तो राजकुमारी न हुई तो तोहफे की तरह उस दैत्यको किसके पास भेजूँगा ? राजकुमारीके सामने वह घुटने टेककर कहता "राजकुमारी मैं फाराकुलियबो नामका दैत्य हूँ जिसे बहादुर "किंज्योति लामनचावाले ने" पहले ही युद्धमें परास्त किया और जिनकी यथेष्ट प्रशंसा कभी होही नहीं सकती है।" ऐसी ही बातें उसके दिमागमें उठा करती थीं। अंतमें उसने अपनी कल्पित प्रेमिका-का नामकरण भी "राजकुमारी दर्शनीया टोबोसोवाली" कर डाला। टोबोसो पासका ही एक शहर था। यह नाम बड़ा कर्णमधुर और सुंदर है।

दूसरा परिच्छेद

बहादुर किंज्योतिको लोगोंके इतने दु ख दूर करने, इतनी भूलें सुधारनी, इतना अत्याचार रोकना और इतनी बुराइयाँ हटानी थीं कि उसने अब एक पल भी विलंब करना उचित न समझा। उसने अपने मनकी बात किसी से न कही। एक दिन सूरज निकलने के पहले ही वह सिरसे पैर तक हर्वे हथियारोंसे लैस हो वायुवेग पर चढ किसी से मिले-जुले विना ही पिछवाडे के द्वारसे निकल पडा।

अपनी यात्राके बडे-बडे उद्देश्योंका विचार कर उसे बड़ा आनद और सतोष हुआ, पर मैदान की हवा लगते ही उसका विचार बदल गया। वह घर लौटने का इरादा करने लगा। उसे अकस्मात् स्मरण हो आया कि मैं अभी तक वीरके पद पर तो अभिषिक्त ही नहीं हुआ, फिर नियमानुसार किसी वीरसे कैसे लड सकूँगा। प्राचीन कालमें वहाँ प्रथा थी कि राजा या उसका सेनापति जिस वीरके कधेको तलवारकी नोकसे छू देता वही पक्का वीर समझा जाता था। किंज्योति बडे असमजस में पड़ गया। अतमें उसकी सनकने

उसकी अक्ल को जीत लिया। उसने निश्चय कर डाला कि जो पहले मिल जायगा उसीसे बहादुरीका टीका करा लूँगा क्योंकि पुस्तकोंमें ऐसा भी लिखा है। बस वह उधर ही चल पड़ा जिधर उसका घोड़ा ले गया। क्योंकि उसका विश्वास था कि सफलता की कुंजी इसीमें है।

इस तरह खयाली पुलाव पकाता वह चला जाता था पर रास्तेमें कोई न मिला। इससे वह निराश सा हो गया। दिन चढ आया। सूरज तेज होगया। पर वह धूपकी परवा न कर चला ही जाता था। शामको भूख-प्यास और थकावटसे अधमरा-सा हो गया। वह बडी उत्सुकतासे किसी गडरियेका झोपडा ढूँढने लगा।

इतने में कुछ दूर पर एक सराय दीख पड़ी जिसके द्वार पर किसानोंकी दो लड़कियाँ खड़ी थीं। वह जो कुछ देखता उसे यही समझ लेता था कि पुस्तकोंमें जैसा कुछ पढा है वही सामने आ रहा है। बस सराय देखते ही उसने समझ लिया कि यह कोई क़िला है जिसमें चार गुम्बज, चाँदी की चमकती हुई शहरपनाह, खुलनेवाला पुल तथा खाई है। पास पहुँचा तो किसानकी लडकियोंको क़िले की राजकुमारियाँ समझ लिया।

लड़कियोंने इस विचित्र वेशधारीको देखा तो डरकर

घरमें घुसने लगीं। किञ्ज्योतिने उन्हें भयभीत हो भागते देख बड़ी नम्रता और गभीरता से कहा—"राजकुमारियो, भागो मत और न डरो, मैं अशिष्टता न करूँगा। जिस वीर पद पर मैं हूँ उसके विचार से मैं तुम्हारी श्रेणीकी किसी महिलाका अनिष्ट न करूँगा।"

लड़कियाँ फिरीं और उसकी बातें सुन खिलखिला उठीं। इस पर वह गर्म हो बोला—"स्त्रियोंकी शोभा लज्जा ही है। साधारण बातों पर इतना हँसना मूर्खताका लक्षण है।" बहादुर किञ्ज्योति जितना गर्म होता उतना ही उनका हँसना बढ़ता जाता था। इतने में सरायका मालिक वहाँ आ पहुँचा। वह भी हँसे बिना न रह सका। बोला—"जनाब बहादुर साहब, अगर आप ठहरने की जगह ढूँढते हो तो मजे में ठहर सकते हैं। सब सामान इफरात से मिलेंगे लेकिन सिर्फ पलँग और बिछावन की यहाँ कमी है।"

किञ्ज्योतिने तो सरायके मालिकको किलेदार समझ लिया था। इनकार करने से अनादर होगा यह समझ वह बोला—"जनाब किलेदार साहब, जो कुछ मिल जायगा वही काफी है।" इतना कह वह बड़ी कठिनता और कष्टसे घोड़ेसे उतरा क्योंकि दिन भर का भूखा प्यासा और थका था। फिर क़िलेदार से घोड़ेको अच्छी तरह रखनेकी प्रार्थना कर

बोला—"ऐसा अच्छा घोडा आज तक पैदा नहीं हुआ।" सराय-के मालिकने घोडेकी ओर ध्यानसे देखा पर उसे किंज्योतिकी बात पूरी क्या आधी भी सच मालूम न हुई। वह घोड़ेको तबेले में बाँध अपने मेहमान के पास आया। आकर क्या देखता है कि दोनों छोकरियाँ किंज्योतिके कपडे निर्भय हो खोल रही हैं। उन दोनों ने बख्तरके अगले और पिछले हिस्से तो खोल डाले पर टोप खोलने में उलझ रही थी। टोप हरे फीते से ऐसा बँधा था कि किसी तरह नहीं खुलता था। उन्होंने फीता काटना चाहा पर किंज्योति राजी न हुआ। लाचार टोप रात भर उसके सिरपर ही रह गया। इससे उसकी सूरत बडी बेहूदा मालूम होती थी।

किंज्योतिने उनकी सेवाओंके लिये बडी साधुभाषा में कृतज्ञता प्रकट की। उन्होंने भोजन के लिये पूछा तो आप बड़ी खुशी से तैयार होगये। दरवाजेके पासही मेज लगाई गयी। सरायके मालिकने कुछ रोटियाँ और सूखी मछलियाँ उसपर ला रखीं। आप खाने को बैठे पर सिर पर टोप रहनेके कारण हाथ आसानी से मुँह तक न पहुँच सका। तब छोकरियाँ खिलाने लगीं। पानी पीना और भी कठिन था। भठियारेने बाँसुरी लाकर उसका एक सिरा तो किंज्योतिके मुँहमें डाल दिया और दूसरे में शराब भर दी। तब आपने

शराब पी। किंज्योतिने यह सब तकलीफ़े सहीं पर टोपका फ़ीता कटवाना मजूर न किया।

इधर सरायमें एक गडरिया भी टिका था। वह मौज में आ बाँसुरी बजाने लगा। अब किंज्योतिको निश्चय हो गया कि यह कोई मशहूर क़िला है। उसने सोचा कि क़िलेवाले मेरी ख़ातिरदारी में बाजे बजा रहे हैं। उसने काली रोटियों और सूखी मछलियोंको ही न्यामत समझा। छोकरियोंको क़िलेकी राजकुमारियाँ और भठियारेको क़िलेका अध्यक्ष समझा। यह समझ उसने सोचा कि यह यात्रा तो बडी सफल हुई। पर कसर यही है कि अब तक मुझे वीरपद न मिला। यह पद नियमानुसार पाये बिना किसी दुस्साहसिक कार्य के लिये यात्रा भी नहीं कर सकता।

तीसरा परिच्छेद

नियमानुसार वीरपद पर आरूढ अब तक न हुआ इस चिंता ने उसे इतना तग किया कि उसने खानेसे हाथ खैंच लिया। भठियारेको बुला उसे साथ ले तवेले में चला गया। दरवाजे बदकर घुटने टेक किंज्योतिने कहा "ऐ ! साहसी वीर, जब तक आप मेरी प्रार्थना स्वीकार न करेंगे तब तक मैं न उठूँगा। इससे आपका गौरव बढेगा और मानव-जातिका लाभ होगा।"

भठियारा किंज्योतिको अपने पैरों पर गिरा और उसके विचित्र वाक्य सुन हका-बका हो उसकी ओर देखता रह गया। कुछ स्थिर न कर सका कि क्या करना और क्या कहना चाहिये। उसने किंज्योतिको उठानेकी कोशिश की पर वह न उठा। लाचार उसने वादा किया कि आप जो कहेंगे करूँगा।

किंज्योति बोला "श्रीमान् से मुझे पूरी आशा है। आपकी उदारताका पूरा भरोसा है। मेरी प्रार्थना यही है कि श्रीमान् मुझे वीरपद प्रदान करने की कृपा करें। आपके किले के

गिरजेमें प्राचीन प्रणाली के अनुसार रात भर मैं शस्त्रोंकी रक्षा करूँगा। कल प्रात काल श्रीमान् मेरी लालसा पूर्ण करदें। फिर मैं सारे ससारमें एक छोर से दूसरे छोर तक दुस्साहसिक कार्यों की खोजमे घूमने और लोगोंके दु ख दूर करने का पूर्ण अधिकारी हो जाऊँगा। अश्वारोही वीरोंका यही कर्तव्य है और उनका मन भी मेरे मनको तरह ऐसे-ऐसे कामोंमें ही लगा रहता है।"

भठियारा भी बडा चालाक था। किंग्योतिके पागल होनेका पहले उसे सदेह ही था, पर अब तो पूरा विश्वास हो गया। उसने दिल्लगी के लिये कोरा जवाब न दे कहा "आपका कहना बहुत ठीक और वाजिब है। जब मैं जवान था तब मैं भी मुहीमकी तलाश मे सारे स्पेनकी खाक छान चुका हूँ। (यहाँ पर उसने ऐसे स्थानोंके नाम लिये जो चोरों, गुडों और डाकुओ के अड्डे थे।) अब मैं इस किलेमें आकर बहादुर सवारोंकी खातिरदारी करता और वह लोग जो कुछ कमाते उसमें हिस्से ले लेता हूँ। लेकिन इस किलेमें गिरजा नहीं है। नया बनेगा इसलिये पुराना तोड़ दिया गया। जरूरत पडने पर आदमी जहाँ चाहता वहीं रस्में अदा कर लेता है। आप चाहें तो इस चौक में ही हथियारों की हिफाजत की रस्म पूरी कर सकते हैं। सबेरा होते ही आप बाजाप्ता बहादुर

सवार बना दिए जायँगे। अच्छा, यह तो बताइए आपके पास क्या कुछ रुपये भी हैं ?"

किंज्योति—फूटी कौडी भी मेरे पास नहीं है। क्योंकि किसी इतिहासमे नहीं पढा कि बहादुर सवार अपने पास रुपये पैसे भी रखते हैं। भठियारा बोला—"आप भूलते हैं। माना कि इतिहासमें ऐसा नहीं लिखा है। लेकिन इससे यह कैसे माना जाय कि वह नहीं रखते थे। असल बात यह है कि रुपये पैसे और साफ कमीज वगैरह ऐसी जरूरी चीजें हैं जिनका रखना बहादुर सवारोंके लिये लाजमी है। इसीसे तवारीखोंमें इनका जिक्र नहीं है। आप यह जानते ही हैं कि बहादुर सवार अपने साथ अकसर एक मुसाहब जरूर रखते थे। मुसाहब न हो तो रुपये से भरा एक बटुआ और मरहम की एक डबिया तो जरूर साथ रखते थे।"

किज्योतिने आगे यह सब चीजे जरूर साथ रखने की प्रतिज्ञा शास्त्र रक्षा का समय आगया। इसलिये उसने बख्तरके टुकडे हौजके सिरे पर रख दिए। दाये हाथमे भाला, बाँयें कधे पर ढाल ले धीरे-धीरे हौजके आगे टहलने लगा। ज्यों-ज्यों रात भीगने लगी त्यों-त्यों वह गश्त लगाने लगा।

इधर भठियारेने किज्योतिके पागलपनका हाल सरायके सब लोगोंसे कह दिया, तो वह लोग भी इस विचित्र ढँगके

पागलपन पर आश्चर्य करने लगे और अलग से तमाशा देखने के लिये बाहर निकल आये। उन्होंने देखा किंज्योति कभी तो बड़ी अकड़ के साथ चहलक़दमी करता और कभी बहुत देर तक स्थिर हो बड़े चावसे बख्तरकी ओर देखता है। इस समय रात एक पहरसे कुछ ज्यादा बीत चुकी थी। चाँदनी भी ऐसी खिली थी कि वह जो कुछ करता सब साफ़ दिखाई देता था।

कुछ गाड़ीवान भी सरायमें ठहरे थे। एक को खच्चरोंके लिये पानीकी जरूरत हुई। पर हौजसे बख्तर हटाये बिना खच्चरोंको पानी पिलाना कठिन था। किंज्योतिने गाड़ीवानको हौजके पास जाते देख चिल्लाकर कहा—"कौन है? बड़ी बेफ़िक्रीसे मेरा बख्तर कौन छूना चाहता है? खबरदार, जान दिये बिना तू उसे नहीं छू सकता, चाहे कोई हो।"

गाड़ीवानने इसकी कुछ परवा न कर बख्तर उठाकर फेंक दिया।

किंज्योतिने ज्योंही यह देखा त्योंही वह आकाशकी ओर देख और राजकुमारी दर्शनीयाका ध्यान कर उच्चस्वर से बोला—"राजकुमारी, इस अपमानका बदला लेने में मेरी सहायता कीजिए।" इतना कह उसने भाला उठाया और एक

हाथ गाड़ीवानके सिर पर ऐसा मारा कि वह ज़मीन पर चित्त गिर पड़ा। अगर एक हाथ और लगता तो डॉक्टर बुलानेकी भी ज़रूरत न पड़ती। इसके बाद वह हौज़ पर बख्तर रख फिर बड़ी अकड़ के साथ पहले की तरह चहलक़दमी करने लगा।

थोड़ी देर बाद दूसरा गाड़ीवान खच्चरको पानी पिलाने आया पर पहले गाड़ीवान पर क्या गुज़री, उसे मालूम न था। पहला अब तक बेहोश पड़ा था। ज्योंही वह हौज़से बख्तर हटाने लगा त्योंही किंज्योतिने कुछ कहे बिना फिर भाला तानकर उसका सिर भी तोड़ डाला। इस पर सब सरायवाले वहाँ इकट्ठे होगये। उनमें भठियारा भी था। किंज्योतिने इन सबको देखते ही ढाल ले तलवार खैंच ली। राजकुमारी दर्शनीया का ध्यान कर वह दुनियाके सब गाड़ीवानों से मुकाबला करने के लिये तैयार होगया। सराय-में जितने गाड़ीवान थे सबने अपने दोनों साथियोंकी दशा देख किंज्योति पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। किंज्योति भी अपने तईं ढालसे बचाता हुआ वहीं डटा रहा, जिसमें कोई यह न कहे कि बख्तर छोड़ भागा। इधर भठियारा गाड़ीवानसे बार-बार कह रहा था—"छोड़दो छोड़दो, पागल है।" इसपर किंज्योति और भी ज़ोर से चीख उठा "तुम

सब दगाबाज और नामर्द हो। किलेदार भी कमीना है जिसने बहादुर सवारके साथ ऐसा बुरा सुलूक किया।" उसकी चिल्लाहटने सचमुच सबको ऐसा डरा दिया कि वह लोग दोनों जखमियों को उठा सरायके भीतर घुस गये। किंज्योति निश्चिंत हो पहलेकी तरह फिर बख्तरकी निगरानी करने लगा।

भठियारेको अपने मेहमानका खेल अब और देखना मंजूर न था। इसलिये उसने बहादुरीकी खिलअत अताकर बखेड़ा दूर करने का इरादा कर लिया। वह किंज्योतिसे गाड़ीवानोंकी गुस्ताखी के लिये माफी माँग बोला "बख्तरकी निगरानी दो घंटे से ज्यादा करने की जरूरत नहीं। मैं अब फौरन आपको बहादुर सवार बना दूँगा।" किंज्योति बोला—"तो अब देर न कीजिए। बना ही दीजिए। अगर वह लोग फिर धावा करेंगे तो मैं क़िलेमें एक को भी जीता न छोड़ूँगा।" भठियारा एक बही उठा लाया, जिसमें उसने गाड़ीवानों के घास-दाने का हिसाब लिखा था। उसे ही उसने प्रार्थना की तरह पढ़ दिया। किंज्योति बराबर घुटना टेके खड़ा रहा। भठियारेने उसके कंधेको उसीकी तलवारसे अच्छी तरह ठोंक दिया। फिर उसने छोकरियोंसे कहा कि बहादुर किंज्योतिकी कमरसे तलवार बाँध दो। एक आकर

तलवार बाँधने लगी पर हँसीके मारे हैरान थी। तलवार बाँध देने पर बोली "भगवान् तुम्हें भाग्यवान् वीर बनावे और लड़ाईमें तुम्हारी जीत हो।"

किज्योतिने कृतज्ञता प्रकटकर कहा—"कृपाकर अपना नाम भी बता दीजिये जिसमें मुझे मालूम हो जाय कि मैं किसका कृतज्ञ हुआ।" छोकरीने कहा "मेरा नाम" "टोलोसा" है। किज्योति बोला—"नहीं, श्रीमतीका नाम राजकुमारी टोलोसा होना चाहिये। उसने कहा "बहुत अच्छा।"

इस अदृष्ट पूर्व कृत्योके पश्चात् किज्योति दुस्साहसिक कार्यकी यात्राके लिये ऐसा उत्सुक हो रहा था कि चटपट वायुवेग पर जा बैठा। फिर किलेदारको उसकी कृपाओंके लिये धन्यवाद दिया। भठियारा भी उससे जल्द पिंड छुड़ाना चाहता था। इसलिये खाने पीनेका खर्च माँगे विना ही धन्यवाद दे उसे बिदा किया।

हैं। लेकिन मैं खुदाकी क़सम खाकर कहता हूँ कि यह झूठा है और मेरे मुँह पर झूठ बोलता है।" किंज्योति बोला "कमीना पाजी, सूरजकी क़सम खाकर कहता हूँ कि मनमें तो आती है कि यह भाला तेरी देहमें घुसेड दूँ। फौरन उसकी तनख्वाह चुका दे, नही तो तुझे मार डालूँगा। खोलदे उसे।" किसानने सिर झुका छोकरेको खोल दिया। किंज्योतिने छोकरेसे पूछा—"तेरा इसके यहाँ क्या बाकी है?" छोकरा बोला—"सात रुपये महीनेके हिसावसे नौ महीनेकी तनख्वाह।" किंज्योतिने हिसाव लगाकर देखा कि ६३) रुपये होते हैं। फिर उसने किसानसे कहा—"वस ६३) रुपये दे हीदो नही तो जानपर वन आवेगी।" किसान बहुत डरकर बोला "इतना नहीं है। मैं मरणसेजकी क़सम खाकर कहता हूँ कि तीन जोडे जूतेका दाम और एक रुपया डॉक्टरकी फीस काटकर जो निकलेगा दे दूँगा।" किंज्योतिने कहा—"ठीक है पर तुमने जो कोडे लगाये उसमें यह वसूल हो गया। उसने तुम्हारे जूते फाडे और तुमने उसका चमडा। जर्राहने उसका खून निकाला जब वह वीमार था और तुमने खून निकाला जब वह अच्छा हो गया। इस हिसावसे तुम्हारा उसके पास अब कुछ न चाहिये।" किसान बोला—"मुश्किल तो यह है कि इस वक्त मेरे पास रुपये नहीं हैं। अगर यह मेरे साथ घर

चले तो एक कानी कौडी भी न रखूँगा।" छोकरा बोल उठा "दुहाई सरकार, मैं इसके साथ कभी न जाऊँगा। वह मुझे अकेला पावेगा तो जीता ही चबा जायगा।" किज्योति बोला—"वह कभी ऐसा न करेगा। मेरा हुक्म ही काफी है। बहादुरोंके जिस ओहदे पर वह है अगर उसकी क़सम खाकर कहे तो मैं उसे छोड़ दूँगा।" छोकरा फिर बोल उठा—"आप क्या कह रहे हैं। यह बहादुरीके ओहदेपर नहीं है। यह तो मामूली किसान है।" बात खतम करनेके लिये किसान बीचमें ही बोल उठा—"मैं दुनियाके सब बहादुरों की क़सम खाकर कहता हूँ कि तेरा जो कुछ बाक़ी है सब दे दूँगा।" किज्योति बोला—"देखना क़सम पूरी करना नहीं तो मैं भी वही क़सम खाकर कहता हूँ कि मैं फिर आऊँगा और तुझे पातालसे भी ढूँढ निकालूँगा। अगर यह जानना चाहता है कि यह हुक्म देनेवाला कौन है तो जान ले कि बुराइयाँ और तकलीफ़े दूर करनेवाला शेरदिल मैं बहादुर *किज्योति हूँ*।" इतना कह उसने वायुवेगको एड लगायी और वह हवासे बातें करने लगा। किसान बराबर किज्योतिकी तरफ देखता रहा। जब वह आँखोंसे ओझल हो गया तब किसान छोकरेसे कहने लगा—"ले तेरी पूरी तन-ख्वाह चुकाये देता हूँ। क्योंकि तेरे हिमायतीका यही ठ

हैं। लेकिन मैं खुदाकी कसम खाकर कहता हूँ कि यह झूठा है और मेरे मुँह पर झूठ बोलता है।" किंज्योति बोला "कमीना पाजी, सूरजकी क़सम खाकर कहता हूँ कि मनमें तो आती है कि यह भाला तेरी देहमें घुसेड़ दूँ। फौरन उसकी तनख्वाह चुका दे, नहीं तो तुझे मार डालूँगा। खोलदे उसे।" किसानने सिर झुका छोकरेको खोल दिया। किंज्योतिने छोकरेसे पूछा—"तेरा इसके यहाँ क्या बाक़ी है?" छोकरा बोला—"सात रुपये महीनेके हिसाबसे नौ महीनेकी तनख्वाह।" किंज्योतिने हिसाब लगाकर देखा कि ६३) रुपये होते हैं। फिर उसने किसानसे कहा—"बस ६३) रुपये दे हीदो नहीं तो जानपर बन आवेगी।" किसान बहुत डरकर बोला "इतना नहीं है। मैं मरणसेजकी कसम खाकर कहता हूँ कि तीन जोडे जूतेका दाम और एक रुपया डॉक्टरकी फीस काटकर जो निकलेगा दे दूँगा।" किंज्योतिने कहा—"ठीक है पर तुमने जो कोडे लगाये उसमें यह वसूल हो गया। उसने तुम्हारे जूते फाड़े और तुमने उसका चमडा। जर्राहने उसका खून निकाला जब वह बीमार था और तुमने खून निकाला जब वह अच्छा हो गया। इस हिसाबसे तुम्हारा उसके पास अब कुछ न चाहिये।" किसान बोला—"मुश्किल तो यह है कि इस वक्त मेरे पास रुपये नहीं हैं। अगर यह मेरे साथ घर

चले तो एक कानी कौडी भी न रखूँगा।" छोकरा बोल उठा "दुहाई सरकार, मैं इसके साथ कभी न जाऊँगा। वह मुझे अकेला पावेगा तो जीता ही चबा जायगा।" किज्योति बोला—"वह कभी ऐसा न करेगा। मेरा हुक्म ही काफी है। बहादुरीके जिस ओहदे पर वह है अगर उसकी क़सम खाकर कहे तो मैं उसे छोड दूँगा।" छोकरा फिर बोल उठा—"आप क्या कह रहे हैं। यह बहादुरीके ओहदेपर नहीं है। यह तो मामूली किसान है।" बात ख़तम करनेके लिये किसान बीचमें ही बोल उठा—"मैं दुनियाके सब बहादुरों की क़सम खाकर कहता हूँ कि तेरा जो कुछ बाक़ी है सब दे दूँगा।" किज्योति बोला—"देखना क़सम पूरी करना नहीं तो मैं भी वही क़सम खाकर कहता हूँ कि मैं फिर आऊँगा और तुझे पातालसे भी ढूँढ निकालूँगा। अगर यह जानना चाहता है कि यह हुक्म देनेवाला कौन है तो जान ले कि बुराइयाँ और तकलीफें दूर करनेवाला शेरदिल मैं बहादुर किज्योति हूँ।" इतना कह उसने वायुवेगको एड लगायी और वह हवासे बातें करने लगा। किसान बराबर किज्योतिकी तरफ देखता रहा। जब वह आँखोंसे ओझल हो गया तब किसान छोकरेसे कहने लगा—"ले तेरी पूरी तनख्वाह चुकाये देता हूँ। क्योंकि तेरे हिमायतीका यही

है।" छोकरा बोला—"लाइये वह भलामानुस हजार वर्ष जिये।" किसानने जवाब दिया—"देख, मैं तुझे कितना चाहता हूँ। कर्ज बढाकर वसूली बढानेकी मैं भी कसम खाता हूँ।" इतना कह उसने छोकरेको फिर पेडसे बाँध दिया और इतने कोडे लगाये कि वह अधमरा-सा हो गया। किसान बोला—"अब बुला अपने हिमायतीको।" इतना कह छोकरेको भी खोल दिया। वह छोकरा भी गुस्सेमें कसम खा यह कहता हुआ चला गया कि मैं उस हिम्मती बहादुरको खोज निकालूँगा और तुझसे सतगुना वसूल करूँगा। इतना होते हुए भी छोकरा तो रोता हुआ भागा और उसका मालिक हँसता हुआ खडा रहा।

किंज्योति खुशी-खुशी सोचता जाता था कि आज मैंने बड़ी भारी बुराई दूरकर राजकुमारी दर्शनीयाका गौरव बढाया है। इतनेमें वह एक चौरास्तेपर जा पहुँचा। उसे याद आया कि बहादुर सवार जब दुराहेपर पहुँचते, तब सोचते हैं कि किधर जाना चाहिये। इसलिये वह भी ठहर गया और सोचने लगा कि अब किधर चलूँ। कुछ देर बाद उसने वायु-वेगकी लगाम ढीली करदी और निश्चय किया कि जिधर यह ले जायगा उधर ही जाऊँगा। घोडेरामने लगाम ढीली पाते ही तबेलेकी राह ली।

लगभग दो मील जानेके बाद किंज्योतिको आदमियोंका एक झुंड दिखाई दिया। वह टोलेडोके सौदागर थे और रेशमी कपडे खरीदने दूसरे सूबेमें जा रहे थे। उनमें छः छाते लगाये, घोड़ोंपर चार नौकर और तीन साईस पैदल थे। उन पर नजर पडते ही, किंज्योति ने समझा कि यह भी कोई नयी मुहीम है। बस वह रिकाबोंपर पैर जमा अकड बैठा। भाला तान और ढाल छातीसे लगा उनकी राह देखने लगा। इसने उन्हें भी बहादुर ही समझ लिया था।

जब वह इतने निकट आगये कि बात सुन सके तब किंज्योति घमडके साथ बोला "तुम लोग सब मजूर कर लो कि राजकुमारी दर्शनीयासे सुदर इस जगतमें कोई नहीं है।" सौदागर यह सुन ठहर गये और उसकी अजीब सूरत देखने लगे। पीछे उन्हे उसका पागलपन मालूम हो गया। उनमें एक दिल्लगीबाज था। वह बोला—"जनाब, हमने राजकुमारीको नहीं देखा है। पहले दिखाइये। अगर वह ऐसी सुंदर होंगी तो जरूर मजूर कर लूँगा।" किंज्योति बोला—"अगर मैंने दिखला ही दिया तो तुम्हारी अक्लमदी क्या हुई? तुम्हारी तारीफ़ तो तब है जब तुम देखे विना ही विश्वास करो, क़ुबूल करो—मजूर करो, क़सम खाओ। और इसपर क़ायम रहो। अगर नहीं करोगे तो मैं लड़ाईके लिये [illegible]।

तुम घमडियोंसे कहता हूँ कि एक-एक कर आओ या सब मिलकर आओ।" यह कह वह बरछी तान ऐसे गुस्सेसे झपटा कि अगर वायुवेग ठोकर खा गिर न पड़ता तो उस बेचारेका कामही तमाम हो जाता।

वायुवेगके गिरते ही उसका सवार भी जमीनपर लोट-पोट करने लगा। वह बरछा, ढाल, महमेज और बख्तरसे ऐसा लदा हुआ था कि कोशिश करनेपर भी न उठ सका। पडा-पडा वह कहता था—"फसादियो! भागो मत। गुलामके बच्चो, ठहरो। यह घोडेका क़सूर है, मेरा नहीं, जो यहाँ लोट रहा हूँ।" एक साईसका स्वभाव ऐसा अच्छा न था कि गालियाँ सुन चुप रह जाता। वह जवाब देनेके लिये किंज्योतिके निकट आया। बरछा छीनकर टुकडे-टुकडे कर डाला और फिर एक टुकडेसे बेचारे बहादुर सवारको पीटते-पीटते बेदम कर दिया। बख़तर उसे न बचा सका। सौदागरोंने बहुतेरा मना किया पर उसने एक न सुनी। जब थक गया तब छोडा। सबके चले जाने पर किंज्योतिने फिर उठना चाहा, पर वह ऐसा जख्मी हो रहा था कि टस-से-मस न हो सका।

किंज्योति जब न उठ सका, तब शौर्य सबधी जो पुस्तकें वह पढ चुका था उन्हें सोचने लगा। फिर जो बहादुर लडाई के मैदानमें जख्मी हो रह जाते थे, उनके बारेमें सोचने लगा।

इस प्रकार आनन्दकी कल्पनामें वह लोट-पोट हो रहा था। पर उसके गाँवके एक मजदूरने आकर उसके आनन्दमें बाधा डाल दी, नहीं तो अभी वह न जाने और क्या-क्या सोचता। मजदूरने जमीनमें पड़ा एक आदमीको देख निकट आकर पूछा "कौन है और क्या माजरा है?" किंज्योति अपनी पुस्तकोंके ध्यानमें था। प्रश्नोंका उत्तर न दे बहादुर सवारोंके विचित्र युद्धादिका वर्णन करने लगा। आखिर मजदूरने टोप हटा, मुँह पोछकर देखा तो पहचान लिया। किंज्योतिकी ऐसी दशा देख उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने भिलम खोलकर देखा तो खून नहीं था। उसने किंज्योतिको खड़ा किया और बड़ी कठिनाईसे अपने गधे पर बिठाया। भिलमके टुकड़े इकट्ठे कर वायुवेग पर लाद दिये। फिर दोनों जानवरोंको गाँवकी तरफ ले चला। पर किंज्योति चुप न था। अपनेको बहादुरोंकी अवस्थामें समझ बोलता जाता था, जिसे सुन बेचारा मजदूर आश्चर्यान्वित हो रहा था।

सूर्यास्तके समय वह ग्रामके समीप पहुँचा तो थोड़ी देर ठहर गया। जब जरा अँधेरा हुआ तब गाँव में गया जिसमें किंज्योतिको गधे पर चढ़ा और कुटा-पिटा कोई न देख ले। किंज्योतिके घर पहुँचा तो देखा कुहराम मचा हुआ है। किंज्योतिकी भतीजी, गृह-रक्षिका, गाँवके पादड़ी,

हज्जाम सब-के-सब उसके गुम होजाने की चर्चा कर रहे
गृह-रक्षिका इसी बात पर जोर दे रही थी कि यह फसाद
विलक्षी कितावोका है। भतीजी कह रही थी इन्हें जल
खाक कर देना था।

किंज्योतिको देखते ही सब-के-सब मिलनेके लिये
आये। लेकिन किंज्योतिने चिल्लाकर कहा—"अलग रहो
बेतरह जख्मी हो रहा हूँ। घोडेके कुसूरसे ही ऐसा हुआ
मुझे पलॅग पर लिटा दो।" सब उसे सोनेके कमरेमे लेग
उसकी देहपर जखमोंकी तलाश हुई पर एक न मिल
किंज्योतिने कहा—"जब मै ससारके दस वडे-वडे वीर
लड रहा था तब वायुवेगसे गिर पडनेके कारण आहत
गया।" उन लोगोंने कई सवाल किये पर किंज्योतिने
जवाब न दे, कुछ खानेके लिये मॉगा और कहा कि मु
आराम करने दो। उन लोगोंने वही किया जो उसने क
था। इस प्रकार वीर किंज्योतिकी पहली चढाई पूरी हुई।

पाँचवाँ परिच्छेद

किज्योति जब खुर्राटे ले रहा था तब पादड़ीने जिस कमरेमें सब फसादोंकी जड़ किताबें रखी थीं उसकी चाबी माँगी। भतीजीने बड़ी खुशीसे चाबी दे दी। सब लोग उस कमरेमें गये। गृहरक्षिका भी साथ थी। वहाँ एक सौसे अधिक बड़ी-बड़ी सुन्दर जिल्ददार पुस्तकोंके सिवा छोटी-छोटी भी बहुत थीं। पादड़ीने हज्जामसे एक-एक कर सब किताब लानेके लिये कहा। उसका इरादा था कि सब न जलायी जायँ। पर भतीजीने कहा—"नहीं, एक भी मत छोड़ो। सब नीचे फेंक दो। वहीं चौकमें जला दी जायँगी।" गृहरक्षिकाने भी यही बात कही।

पादड़ी और हज्जाम जलाने योग्य पुस्तकें चुनने लगे, पर गृहरक्षिका जलानेके लिये बेचैन हो रही थी। उसने कुछको छोड़ बाकी सब-की-सब अग्निदेवको समर्पित कर दीं। पादड़ी और हज्जामने किज्योति की बीमारीकी एक दवा और भी बतायी। वह यह कि पुस्तकालयका द्वार ईंटों से चिन दिया जाय और कह दिया जाय कि जादूगर पुस्तक-सहित कमरा उठा ले गये।

छठा परिच्छेद

इस प्रकार वह दोनों जब बातें कर रहे थे तब उन्हें तीस-चालीस पनचक्कियाँ सामने दिखाई दीं। किंज्योतिने देखते ही कहा—"हमलोग जैसा चाहते हैं, उससे अधिक हुआ चाहता है। दोस्त सनकूराव, जरा उधर देखो, वह जो तीस-चालीस महादैत्य दिखाई देते हैं उन्हें अभी जाकर मारता हूँ। उनका मालमत्ता लूटकर हम लोग धनी हो जायँगे। यह नीतिका युद्ध है। ऐसे दुष्टात्माओंको ससारसे दूर कर देना भगवान्की अच्छी सेवा है।"

सनकू—दैत्य—कहाँ ?

किंज्योति—वही जो सामने दिखाई देते हैं, जिनकी बडी-बडी भुजाएँ हैं। किसी-किसीकी भुजाएँ तो छः छः मील लंबी होती हैं।

सनकू—लेकिन यह तो पनचक्कियाँ हैं। दैत्य कहाँ हैं। जिन्हें आप भुजाएँ कह रहे हैं, वह तो उनके पहिये हैं। जब हवासे यह घूमते हैं तब पनचक्कियाँ चलती हैं।

किंज्योति—तुम अद्भुत कर्मों का मर्म नहीं समझते इसीसे ऐसा कहते हो। अरे यह दैत्य हैं। अगर डरते हो तो

हटकर परमात्मासे प्रार्थना करो और मैं उनसे अद्वितीय भयानक युद्ध करने जाता हूँ। इतना कह उसने वायुवेगको ऍड लगायी और अपने मुसाहबकी एक न सुनी। समीप पहुँचकर भी अपनी सनकमें चिल्ला-चिल्लाकर कहता जाता था—"नामर्दो, ठहरो! भागो मत! मैं बहादुर अकेला ही तुम सबपर आक्रमण करता हूँ।"

हवा जरा तेज होगयी थी। इससे वह पहिये भी चक्कर काटने लगे थे। किंज्योतिने फिर ललकारकर कहा—"तुम्हें कितनी भुजाएँ हैं इसकी मैं परवा नहीं करता। तुम्हें इसका मजा चखाता हूँ।" इतना कह उसने राजकुमारी दर्शनीयासे इस विपत्तिमें सहायताके लिये प्रार्थनाकी। फिर ढालसे अपनेको बचा बरछा तान इतनी तेजीसे चला जितनीसे वायुवेग उसे ले जा सकता था। पहले जो पनचक्की मिली उस-पर उसने भालेसे वार किया। भाला तो पहियों में घुसतेही टुकडे-टुकडे हो गया और सवार घोडे सहित जमीनपर सिरके बल गिर पडा।

इधर गधेने भी अपनी पूरी ताकत खर्चकर सनकूरावको बहादुर किंज्योतिके पास मददके लिये पहुँचा ही दिया। सनकूने पहुँचकर देखा कि बहादुर सवार घोड़ेके साथ भूमिमें शयन कर रहा है। ऐसी पटक लगी कि उठना हराम

रहा है। सनकू बोला—"क्या मैंने नहीं कहा था कि यह पनचक्कियाँ हैं, दैत्य नहीं। जिसने कभी पनचक्कियाँ देखी होंगी वह कभी ऐसी भूल नहीं कर सकता।"

किज्योति—शात मित्र सनकू शात सुनो युद्धकी गति जैसी वदलती है वैसी किसीकी नहीं वदलती। मैं समझता हूँ क्या, बिलकुल ठीक है कि जिन जादूगरोंने मेरा कमरा और पुस्तकें चुराली हैं उन्होंने इन्हें चट-पट पनचक्कियाँ बना दिया है, जिसमें मैं इन्हें न जीत सकूँ। वह मुझसे वडी शत्रुता रखते हैं। वह चाहे जितनी बुराइयाँ करें लेकिन उनका जादू मेरी तलवारपर नही चल सकता है।

सनकू—बेशक नही चल सकता है।

इसके बाद सनकूने अपने बहादुर मालिकको उठा वायुवेगपर लादा पर बेचारा जानवर भी बेतरह घायल हो रहा था।

सातवाँ परिच्छेद

इस नयी मुहीमकी चर्चा करते दोनों एक घाटीकी तरफ चले। किंज्योति कहता जाता था कि घाटीकी ओर दुस्साहसिक कर्मों का अभाव न होगा। यही उनकी सीधी सडक है। मनकूने छूटते ही कहा—"आप एक ओर झुके जाते हैं। जीनपर जरा सीधे बैठिये। मालूम होता है, गिरनेसे चोट ज्यादा लगी है।"

किंज्योति—निश्चय यही बात है। बहादुर सवार कभी तकलीफकी कोई बात नहीं कहते। इसीसे मैं भी नहीं कहता हूँ।

सनकू—अगर ऐसा है तो मैं क्या कहूँ। लेकिन मुझेतो जरा सी भी तकलीफ होगी तो मैं कहे बिना न रहूँगा। क्या मुसाहबोंको भी न कहना चाहिये? किंज्योति सनकूकी सरलतापर हँसे विना न रह सका। बोला—"तुम मजे में कह सकते हो क्योकि शौर्य्य-शास्त्र में तुम्हारे लिये निषेध नहीं है।"

वह घाटीके पास पहुँचे तो उन्हें सेंटबेनीडिक्ट के मता-

नुयायी दो मठवासी दिखाई दिये । वह खच्चरोंपर सवार और छाते लगाये थे । उनके पीछे एक सेजगाड़ी थी जिसके साथ पाँच-छः सवार और दो सईस थे । सेजगाडी में विस्केकी बेगम थी । वह अपने पतिके पास सेविल जारही थी । वह किसी बडे पदपर अमेरिका जानेवाला था । मठवासियोंसे उसका कोई सबध न था । दोनों अपने-अपने कामसे जा रहे थे । किंज्योति उन्हें देखते ही अपने मुसाहब से बोला—"अगर मेरी भूल न हो तो मैं कह सकता हूँ कि यह मुहीम सबसे जबर-दस्त होगी । यह जो काली पोशाक पहने नजर आते हैं बेशक जादूगर हैं और किसी बेगमको चुराये गाडीपर लिये जाते हैं । मैं यह अत्याचार नहीं देख सकता ।"

सनकू—"यह पनचक्कियोंसे भी खराब निकलेगी । यह जादू-गर नही, मठवासी हैं । यह गाडी भी मुसाफिरो की है ।"

किंज्योति—"मैं कह चुका हूँ, तुम मुहीमके बारेमे कुछ नहीं जानते । मैं कहता हूँ, वह ठीक है या नहीं यह अभी दिखाये देता हूँ ।"

इतना कह किंज्योति आगे बढा और सडकके बीचमें डट गया । मठवासी पास आये तो वह डपटकर बोला—"पापी पिशाचो, जिस बेगमको भगाये लिये जाते हो उसे छोड़ दो नहीं तो मरनेके लिये तैयार हो जाओ ।" मठवासी खबर

रोक ठहर गये और उसकी सूरत और बातोंपर आश्चर्य कर कहने लगे। "वीरवर, हम न पापी हैं और न पिशाच, हम तो मठवासी हैं। उस गाडीमें बेगम है या कौन यह भी हम नहीं जानते।" किंज्योतिने कहा "इन मीठी बातोंसे काम न चलेगा।" यह कह वह वायुवेग को ऍड लगा, भाला तान अगले मठवासी पर ऐसा झपटा कि अगर वह खच्चरसे उतर न पडता तो मरता नहीं, तो धराशायी अवश्य हो जाता।

दूसरा मठवासी अपने साथीकी दशा देख खच्चर समेत रफूचकर हुआ। किंज्योति दौडकर गाडीपर जा चढा। सनकू मठवासी को जमीन चूमते देख गधेसे कूद पड़ा और उसके कपड़े उतारने लगा। मठवासियोंके दोनो साईसोंने आकर पूछा—"मेरे मालिकके कपडे क्यों उतारे?" सनकू बोला—"क्यों न उतारूँगा? मेरे मालिकने लडाई जीती है। यह लूटका माल है। इसपर मेरा हक है।" साईसोंने लूट, लडाई आदि का मतलब कुछ न समझा। किंज्योतिको कुछ दूरपर गाडीवालोंसे बातें करते देख उन्होंने सनकूको जमीनपर दे मारा और इतना ठोंका कि उसे अम्माजानका दूध याद आ गया। मठवासी इधर-उधर न देख खच्चरपर जा चढा और सरपट भागा।

इधर वीर किंज्योति बेगमसे कहने लगा—"श्रीमतीको

गिरफ्तार करनेवाला मेरे हथियारके जोरसे जमीनपर पड़ा आसमान देख रहा है। श्रीमतीको मेरा नाम शायद मालूम न हो इसीलिये बताये देताहूँ कि मेरा नाम वीर किंज्योति लामनचावाला है। और मैं परम सुदरी राजकुमारी दर्शनीया टोबोसोवालीका प्रेमी हूँ। बस मैं एकही इनाम चाहता हूँ। वह यह कि श्रीमती इसी गाडीपर टोवोसो चली जायँ और मेरी हृदयेश्वरीसे अपने छूटनेका सारा वृत्तात कहदें।"

बिस्केके एक रईस भी वेगमके साथ थे। उन्होंने किंज्योतिकी बाते सुन उसके पास आ भाला पकडकर कहा—"हट-जाइये, अगर गाडी न छोडेंगे तो मैं कसम खाकर कहता हूँ, आपकी जानपर बन आवेगी। मैं भी बिस्केका रहनेवाला हूँ। चलिये हटिये।" किंज्योति बोला—"अगर तुम भलेमानस होते तो मैं तुम्हारी बेवकूफीका जवाब देता।" बिस्केवालेने कहा—"मैं भलामानस नहीं! मैं कसम खाकर कहता हूँ, तू झूठा है। अगर भाला फेक दे तो मैं वही कर डालूँगा जो बिल्ली चूहेके साथ करती है।"

किंज्योति भाला फेंक ढाल लगा उसका काम तमाम करनेके लिये उसपर टूट पडा। बिस्केवालेको इतनी मुहलत न थी कि खच्चरसे उतरता। वह केवल तलवार खैंच और गाड़ीकी गद्दी ले ढाल बना सका। बेगमने दोनोंको

भिड़ते देखा तो कोचवानको एक तरफ गाड़ी हटा लेनेके लिये हुक्म दिया। कोचवानने गाडी एक तरफ करली और वह वहींसे युद्ध देखने लगी। बिस्केवालेने एक भरपूर हाथ किंज्योतिके कंधेपर मारा। अगर झिलम न होता तो उसके दो टुकड़े हो जाते। अब किंज्योति चोट खा राजकुमारी दर्शनीयाका स्मरण कर जानपर खेलनेको तैयार हो गया। बिस्केवालेने गद्दीसे अपनेको बचा पैंतरा बदला। किंज्योतिका वार ऐसे जोरका हुआ कि उसके मुँह और नाकसे खूनका फौवारा चलने लगा। खच्चर भागनेके लिये ऐसा घबराया कि बिस्केवाला जमीन पर जा रहा।

वीर किंज्योति शांतिपूर्वक डटा रहा। जब उसने देखा कि शत्रु भूमिपर गिर पडा तब घोड़ेसे उतर उसके समीप गया। तलवारकी नोंक उसकी आँखोंसे लगाकर उसने कहा—"हार मानों नहीं तो धडसे सिर अलग करदूँगा।" बिस्केवालेकी दशा ऐसी न थी कि कुछ जवाब दे सकता। किंज्योति उस समय क्रोधसे उन्मत्त-सा हो रहा था। उसका चुप रहजाना और भी गजब ढाता पर बेगमने आकर प्राण-दान की भिक्षा माँगी। किंज्योति ने कहा—"मैं प्राणदान देता हूँ पर एक शर्तपर। यह बहादुर राजकुमारी दर्शनीयाके निकट टोबोसो जाकर प्रार्थना करे। वह जैसा उचित सम-

झँगी करेंगी।" वेगमने डरके मारे यह भी न पूछा कि दर्शनीया कौन है और किंज्योति क्या चाहता है। उसने कुछ समझे बिना ही तुरंत वादा कर पिंड छुडाया। और किंज्योतिने भी छोड़ दिया।

आठवाँ परिच्छेद

पिछले परिच्छेदकी घटनाके बाद किंज्योति अश्वारूढ होचला और मुसाहब सनकूराव भी साथ होलिया। कुछ दूर जानेके बाद किंज्योतिने पूछा—"सनकू, थैलेमें कुछ खानेकी भी चीजें हैं ?"

सनकू—हुजूर हाँ, एक प्याज, पनीरका एक टुकडा, कुछ टुकड़े रोटियोंके भी हैं लेकिन यह हुजूर जैसे बहादुरके खाने लायक नहीं हैं।

किंज्योति—इस बारेमें तुम्हारा ज्ञान कितना थोडा है ! तुम यह जान रखो कि बहादुर सवारोंके लिये यह कितने गौरवकी बात है कि वह लोग महीनेमें एक बार ही खायँ। और वह भी क्या ? जो कुछ मिल जाय। अगर तुम मेरे जितना इतिहास पढे होते तो यह सब जानते। उनके लिये जब कभी तैयारी से खाना पकाया जाता था तब-ही वह लोग उमदा-उमदा खाना खाया करते नहीं तो सूँघ कर ही रह जाते थे। यह भी अनुमान किया जाता है कि वह लोग कुछ खाये विना नहीं जी सकते थे और उन्हें सदा जगलों और पहाड़ोंमें भटकना पडता था, तो ऐसी दशामें वह वैसा ही खाना खाते होंगे जैसा तुम अभी मुझे देते हो।

सनकू—क्षमा कीजियेगा। मैं न लिखना जानता हूँ और न पढ़ना। बहादुरोंकी बातोंसे मैं बिलकुल जानकार नहीं। पर अबसे मैं अपने थैलेमें सूखे फल हुजूरके लिये रखा करूँगा क्योंकि हुजूर बहादुर हैं। और मैं तो बहादुर नहीं इसलिये अपने लिये अच्छी-अच्छी चीजें रखूँगा।

इतना कह उसने थैलेमें जो कुछ था निकाला और दोनोंने बड़े अनद और प्रेम से खाया।

कुछ दूर जानेके बाद एक जगल मिला। किंज्योति विश्राम करनेके लिये यहाँ घोड़ेसे उतर पडा। घोडा पास ही चरनेके, लिये छोड दिया और आप एक पेडके नीचे आरामसे लेट गया। वायुवेग चरता-चरता जरा दूर निकल गया। फिर जहाँ कुछ घोडियाँ चर रही थी वहाँ जा पहुँचा। घोड़ियोंका स्वभाव अच्छा नही था। वह दुलत्तियाँ झाडने लगीं, जिससे वायुवेगका, तग टूट गया और वह जमीनपर जा लेटा। यगुयासके रहनेवाले मजदूरोंकी यह घोडियाँ थीं। यह लोग इधर-उधर आराम कर रहे थे। गडबड देख चारों ओरसे दौड आये और लगे। वायुवेगकी बेतरह खबर लेने।

किंज्योति और सनकूने वायुवेगको पिटते देखा तो दौडते-हाँफते उसके निकट पहुँचे। किंज्योतिने कहा—"सनकू, यह सब

बहादुर नहीं मालूम होते। यह कमीने बदमाश हैं। यह इसलिये कहता हूँ जिसमें तुम इन्हें ठीक करनेमें मेरी सहायता करो।" सनकू बोला—"हम क्या ठीक करेंगे? यह बीस और हम दोही हैं।"

किंज्योति—"अकेला मैं सौके बराबर हूँ।" कह तलवार ले बागसियों पर झपटा। सनकूने भी उसका साथ दिया। किंज्योतिने पहुँचकर तलवारका एक भरपूर हाथ एक मजदूरके कँधे पर मारा। मजदूरोंने भी दोहीको धावा करते देख इकट्ठे हो लट्ठ चलाना शुरू कर दिया। फिर क्या था? सनकू जमीन पर लेट गया और किंज्योति भी अपने सब दाव पेंच भूल वायुवेगके पैरोंके पास लोट गया। मजदूरोंने दोनोंको गिरते देखा तो चटपट घोडियों पर बोझ लाद नौ दो ग्यारह होगये।

जिसे पहले होश हुआ वह सनकू था! उसने अपनेको मालिकके निकट पडा देख आह भरी। रोनी-सी धीमी आवाजमें पुकारा—"बहादुर किंज्योति आह!" किंज्योति भी उसी सुरमें बोला—"क्या है भाई सनकू?"

सनकू—हम लोग चलने-फिरने लायक़ कितने दिनों में होजायँगे?

किंज्योति—अपने बारेमें तो मैं कुछ नहीं कह सकता। लेकिन यह अपना ही दोष है। जिन्हें मेरी तरह बहादुरीका

टीका नहीं लगा उनपर तलवार नहीं चलानी थी। नियम तोड़नेका यह दण्ड है। मेरे प्यारे सनकू! मैं जो कुछ कहता हूँ उसे ध्यानसे सुन। इसमें दोनोंका फायदा है। अब जब कभी ऐसे कमीनोंसे मुकाबला हो, तो मेरे भरोसे मत रहना। मैं तो अब कभी ऐसा न करूँगा। तू दिल खोलकर भिड़ जाया करना। हाँ अगर कोई बहादुर उनकी मदद करेगा, तो मैं भी तेरी करूँगा। तूने हजारों बार देखा होगा कि मेरे हथियार कैसे जबरदस्त हैं। भिस्केवालेपर विजय पानेके कारण किंज्योति अभिमानके मारे फूला न समाता था। लेकिन सनकू रावको यह बेवक्त की सहनाई पसद न आयी। वह बोला—"हुजूर, मैं सीधा-सादा झगड़े से दूर रहनेवाला आदमी हूँ। कैसी भी हानि हो उसे सह सकता हूँ। क्योंकि मैं बाल बच्चेवाला हूँ। अब आप मुझे छुट्टी दे दें। हुकूमत करना मेरा काम नहीं। मैं किसी तरह भी किसानों और बहादुरोंपर तलवार न उठाऊँगा। यह मैं सलाहकी तरह कहता हूँ। जिन्होंने मेरा कुछ नुकसान किया उन्हें मैं छमा कर देता हूँ और आगे भी धनी या दरिद्र, सबल या निर्बल चाहे जो मुझे सतायेगा उसे भी क्षमा करता हूँ।"

किंज्योति—सनकू, अगर पसुलियोंका दर्द कम होजाता और बोलनेकी ताकत होती तो मैं तेरी भूल तुझे अच्छी

तरह समझा देता। मूर्ख सुन! भाग्यकी जो हवा अभी हमारे विरुद्ध चल रही है, अगर अनुकूल चलने लगे और हमारी कामनाओंके प्यालेको भर दे और फिर हम लोग जिन द्वीपोंके बारेमे तुमसे कह चुका हूँ कहीं उनमें पहुँच जायँ तो, सनकू बता तू क्या करेगा? अगर मैंने एक द्वीप जीत लिया और तुझे उसका शासक बना दिया तो तू मेरा सारा परिश्रम व्यर्थ कर देगा क्योंकि न तो तू बहादुर है और न बनना ही चाहता है। अपने हानिकरनेवालोंसे बदला लेनेका न तो साहस है और न अपने राज्यको बचानेका कलेजा ही है। यह तू जान रख कि नये जीते हुए राज्योंके रहनेवालोंका मन कभी ऐसा शात नहीं होता और न अपने नये स्वामीकी ओरसे साफ ही रहता है। उस नये स्वामीको यह डर जरूर रहता है कि यह लोग परिस्थिति बदल डालनेका प्रयत्न अवश्य करेंगे।

सनकू—आपने जिस साहस और समझकी बात कही है मैं चाहता हूँ कि वह मुझमें हो जायँ। पर मैं इस वर्तमान विपत्तिमें गरीबोंकी ईमानदारीकी कसम खाकर कहता हूँ कि इस समय मेरे लिये उपदेशसे अधिक मरहमपट्टीकी जरूरत है।

किज्योति—सचमुच ऐसी ही बात है। पर मैं जानता हूँ

कि यह सब असुविधाएँ ही वीरताका अंग हैं। अगर ऐसा न होता तो अब तक मैं घबराकर मर गया होता।

सनकू—हूजूर, अगर यह सब विपत्तियाँ केवल वीरताका ही फल हैं तो क्या ऐसा अकसर होता है ? मैं सोचता हूँ कि ऐसे दो फल और मिले तो तीसरेके योग्य हम लोग न रहेंगे।

इसपर किंज्योतिने एक मशहूर बहादुरका लवा क़िस्सा कह सुनाया जिसे उसने पुस्तकोंमे पढा था।

किस्सा पूरा होने पर सनकू कराहकर उठा। बडी मुश्किलसे अपने गधेपर काठी रखी। फिर वायुवेगको खडा किया। अगर वायुवेग बोलता तो कहता कि तुम दोनोंसे मेरी हालत खराब है। सनकूने किंज्योतिको गधेपर बिठाया और वायु-वेगकी गर्दन गधेकी दुमसे बॉधदी। फिर जिधर रास्ता मिला उधरही उन्हें ले चला।

मुश्किलसे वह लोग तीन मील गये होंगे कि एक सराय नजर आयी पर किंज्योतिने उसे किला ही बताया। सनकूको इस पर बडा अफ़सोस हुआ। वह दृढतासे कहता था कि सराय है, पर किंज्योति अपनी बात पर ही डटा रहा। इसी तरह सराय और क़िलेका झगडा करते वह लोग सरायके नजदीक जा पहुँचे। सनकू कुछ कहे-सुने बिनाही मवेशियोंकी बरात लिये उसमें घुस गया।

नवॉ परिच्छेद

भठियारे ने किंज्योतिको गधेपर आड़ा पडा देख सनकसे पूछा कि माजरा क्या है ? उसने कहा—"कुछ नहीं, जरा पहाडीसे गिर पडे इससे पसलियोमें चोट आगयी है। भठियारिनका स्वभाव जरा और ढग का था। भठियारिनोंका जैसा होता है वैसा नहीं। उसके चित्तमें दया थी और दूसरोंके दु खसे वह शीघ्र पिघल जाती थी। वह तुरत किंज्योतिकी सेवा शुश्रूषा करने लगी। उसके एक बडी सु दर बेटी थी। एक काली-कलूटी नाटी मोटी दाई भी थी। पर थी बडी चालाक। दोनोंने सेवा शुश्रूषामें हाथ बटाया। ऊपर-वाले कमरेमें किंज्योतिके सोनेके लिये मामूली-सा बिछावन बिछाया गया। यह कमरा बहुत दिनों तक घास रखनेके काममें लाया गया है यह साफ मालूम होता था। चार खुरदरे तख़्ते दो मेंजोंके छोटे-बडे ढाँचों पर रखकर पलँग बनाया गया और तोशक लिहाफ से ज्यादा मोटी न थी। उसमें जो कुछ भरा था वह पत्थरसे भी कड़ा था। चादरे चमडेको भी मात करती थीं। कम्मलके सूत तो अलग-अलग गिने जा सकते थे।

इस फरमायशी बिस्तरपर किज्योति लेट गया और मरहम पट्टी होने लगी। भठियारिनने कहा, यह गिरनेकी चोट नहीं मारकी है। सनक़ू बोला—"यह जहाँ गिरे वहाँ जमीन जरा पथरीली थी इसीसे ऐसी चोट है। जरा मिहरबानी कर कुछ मरहमपट्टियाँ मेरे वास्ते भी रख छोडो। मेरी पसुलियोंमें भी दर्द है।" भठियारिनने पूछा क्या तुम भी गिर पडे थे? सनक़ू बोला—"नहीं। मैं गिरा तो नहीं पर मालिकको गिरते देख मेरे भी दर्द हो आया।" भठियारिनकी बेटीने कहा—"हाँ ऐसा होसकता है। मैं सपनेमें जब कभी किसी ऊँचे गुबजसे गिरती हूँ तो नीद खुलने पर मालूम होता है मानों सचमुच चोट लगी है।"

मुख्तसर यह कि सनक़ूकी भी मरहमपट्टी हुई। किंज्योति अब भी अपनेको किसी क़िलेमें और इन औरतोंको क़िलेकी राजकुमारियाँ समझ रहा था। वह और चुप न रह सका लगा बहादुराना लेक्चर झाडने। पर उन औरतोंमें एकने भी उसके औपन्यासिक व्याख्यानका एक शब्द भी न समझा उन्होंने जाना कि यह धन्यवाद दे रहा है। वह भी बदलेमें धन्यवाद दे चली गयी। लेकिन किंज्योतिको दर्दके मारे अच्छी नींद न आयी।

सबेरे एक कीमती दवा खानेके कारण किंज्योतिका

सचमुच मचलाने लगा। तबीयत जरा ठीक हुई तो फिर वही मुहीमकी सनक सवार हो गयी। चट घोड़ेपर जा चढा और सरायके एक कोनेमे लोहेकी छड उठा लाया, उस समय वहाँ बीस पच्चीस आदमी थे। सबके सब उसे देखने बाहर निकल आये। किंज्योतिने भठियारेको सबोधन कर बडी गभीरतासे कहा—"किलेदार साहब, आपके किलेमें मेरी बडी खातिर हुई। अगर किसी दुष्टने आपका कुछ बिगाडा हो तो बताइए उसे ठीक कर आपके अहसानका बदला चुका दूँ। मैं सेवाके लिये सब तरहसे तैयार हूँ।"

भठियारेने भी उसी गभीरतासे जवाब दिया—"जनाब बहादुर साहब, आपको तकलीफ करने की ज़रूरत नहीं, मैं अपने दुश्मनोंसे आप ही निबट लूँगा। मैं हुजूरसे सिर्फ घास, जई और आपके खानेका दाम और कमरेका भाडा चाहता हूँ।"

किंज्योतिने साश्चर्य कहा—"तो क्या यह सराय है ?"

भठियारा—हुजूर हाँ और बडी शानवाली है।

किंज्योति—तो अब तक मैं बडे भ्रममें था। मैं तो इसे एक अच्छा किला समझे हुआ था। अगर यह सराय है तो तुम मुझसे दाम मत लो। क्योंकि मैं बहादुरीका नियम नहीं तोड सकता। मैंने ऐसा किसी किताबमें नहीं पढ़ा कि बहादुर सवार सरायमें ठहरनेका या खाने-पीनेका दाम

देते है। इसका सबब यह है कि वह लोग मुहीमकी खोजमें क्या जाडा, क्या गर्मी, क्या पैदल, क्या घोडेपर, दिन-रात भूखे-प्यासे सब तरहके कष्ट झेलते घूमते हैं। इसीके बदले उन्हें अच्छी-से-अच्छी जगह ठहरनेके लिये दी जाती है।

भठियारा—मैं यह सब कुछ नही जानता। मेरा पावना है सो दे दीजिये। मैं बहादुर सवारोंकी कहानियाँ नहीं सुना चाहता। मैं अपना रुपया चाहता हूँ और कुछ नही।

किश्योति—तू बेवकूफ कमीना भठियारा है।

यह कह वायुवेगको एँड लगा अपना नया भाला घुमाता हुआ चल दिया और कोई कुछ न बोला। उसने फिरकर भी न देखा कि उसका मुसाहब कहाँ है।

भठियारेने देखा कि वह दाम दिये विना चल दिया तो उसने दौडकर सनकूरावको पकडा। सनकूने कहा—"मेरे मालिकने ही न दिया तो मैं क्यों देने लगा। मैं बहादुर सवारका मुसाहब हूँ। मैं भी उसी नियमके अनुसार सरायमे ठहरने वगैरहका भाड़ा न दूँगा।"

इसपर भठियारेराम बहुत बिगडे। कहने लगे—"नहीं दोगे तो पीछे पछताओगे।" सनकूराव अपने मालिककी बहादुरीकी कसम खा बोला कि चाहे जान चली जाय पर एक कौडी न दूँगा। मैं ऐसे सुंदर पुराने दस्तूरको नहीं तोड सकता।

सनकूके दुर्भाग्यसे उस समय सरायमें चार जुलाहे, तीन सुईबनानेवाले और दो कसाई मौजूद थे। वह सबके सब बडे बेपरवा और मस्त खिलाडी थे। इन नव्वों खिलाडियोंने सनकूको गधेसे उतार लिया। एक भठियारेका लाल कम्मल ले आया। सनकूको कम्मल में बाँध बाहर मैदानमें ले आये क्योंकि कमरेकी छत नीची थी और वहाँ पूरा मजा न आता। वह लोग सनकूको कम्मल के बीचमें रख लगे ऊपर उछालने मानों पिल्ला उछालते हों।

सनकू इतने जोरसे रोया चिल्लाया कि उसकी आवाज किज्योतिके कानों तक पहुँचही गयी। वह किसी नयी मुहीमकी उम्मीदसे ठहर गया और इधर-उधर देखने लगा तो मालूम हुआ कि सनकूकी आवाज है। वह लौटकर सरायके फाटकपर आया पर उसे बंद पाया। वह दरवाजेकी तलाशमें चारों ओर चक्कर काटने लगा। आँगन की चहारदीवारीके पास पहुँचते ही उसने अपने मुसाहब की दशा देखली क्योंकि चहारदीवारी बहुत ऊँची न थी। अपने मुसाहबको ऐसी खूबी और फुर्तीसे ऊपर नीचे जाते देखा कि अगर गुस्से में न होता तो जरूर हँसता। वह घोडेकी पीठपर से ही दीवार पर कूदना चाहता था पर कलकी चोटके सबब न कूद सका। न कूद सका तो उछालने-वालों पर गालियोंकी झडी बाँध दी जिसका वर्णन व्यर्थ ही है।

वह नव्वों खिलाडी सनकूको उछालते और हँसते थे। सनकू कभी धमकाता और कभी खुशामद करता पर कोई न सुनता था। अतमे वह लोग थक गये तब छोडा। फिर उसे कोटमें लपेट गधेपर रख दिया। दाई दयाकर एक गिलास ठढा पानी ले आयी। पर सनकूने एक ही घूँट पी शराबकी फरमायश कर दी। उसने शराब ला दी पर उसका दाम अपने पास से दे दिया।

शराब पीनेके बाद सनकू गधेपर लेट गया। फाटक खुल गया और वह बाहर होगया। लेकिन मनमे वह इस बातसे खुश था कि चाहे जो हो दाम नहीं दिया और मेरी ही बात रही। भठियारेको सनकूका बटुआ हाथ लग गया था जिससे उसके रुपये वसूल हो जाते लेकिन वह जाने के वक्त इतनी घबराहटमें भी बटुआ लेना न भूला।

सनकूके चले जाने पर भठियारेने बहुतेरा चाहा कि फाटक बद करदे पर कम्मलकाडियों ने न करने दिया। वह बोले, अगर किज्योति सचमुच बहादुर हो तो भी हम उसकी जरा भी परवा नही करते हैं।

दसवाँ परिच्छेद

सनकू अपने मालिकसे आकर मिला तब उसका रंग फक था। ऐसा सुस्त हो रहा था कि गधेपर बैठनेकी भी ताब उसमें न थी। क्रिज्योतिने उसकी ऐसी हालत देखकर कहा—"सच्चे सनकू, अब मुझे पूरा विश्वास होगया कि वह किला या सराय चाहे जो कहो निश्चय ही जादूका खेल था। जिन लोगोंने तेरे साथ ऐसी बेरहमी की है वह दैत्योंको छोड और क्या हो सकते हैं। इसका विश्वास मुझे तब और भी हो गया जब मैं वायुवेगसे न उतर सका। अगर उतर सकता तो उन नीच हत्यारोंको ऐसी खबर लेता कि वह भी जन्म भर याद रखते।"

सनकू—अगर ले सकता तो मैं ही ले लेता लेकिन क्या करूँ न ले सका, पर वह दैत्य नहीं हमारे जैसे हाड चामके आदमी ही थे। उछालते समय मैंने सुना कि उनके अलग-अलग नाम थे। मैंने यह भी समझ लिया है कि अगर हम लोग इसी तरह मुहीम ढूँढते फिरेंगे तो हम आफतों मे फँसते ही चले जायँगे और अपना दायाँ पैर भी न पहचान सकेंगे। मेरी राय नाक़िस में तो यही आता है कि हम लोग घर लौट

चले और अपना-अपना काम-काज देखें। ※सीकेसे मक्के तक योंही धूल फाँकते हुए एक आफ़त से छूट दूसरी में न फसें।

किंज्योति—बहादुरीके बारेमें तू कुछ नहीं जानता। चुप रह और सब्र कर। एक दिन ऐसा आवेगा जब तू जानेगा कि यह पेशा कैसे फख़्रका है। अच्छा बता तो सही इस ससार में युद्ध जीतने से जितना आनद तथा सतोष होता है उतना किससे होता है ? मैं कहूँगा निस्सदेह किसी से नहीं।

सनकू—हो सकता है—चाहे मुझे न मालूम होता हो। पर मैं इतना जरूर जानता हूँ कि जबसे हम लोग बहादुर सवार बने—नहीं आप हुए हैं—तबसे आज तक एक लड़ाई भी न जीती। हाँ, बिस्केवाले को आपने जरूर हरा दिया था। लेकिन वहाँ भी आपने आधा कान और आधा टोप गँवाया था। तबसे आज तक मार-पर-मार ही खाते चले आ रहे हैं। इसके सिवा मेरा कम्मल पर उछाला जाना। और वह भी ऐसे जादूगरोंने किया जिनका हम कुछ नहीं कर सकते।

किंज्योति और सनकू जब इस तरह बाते करते जा रहे थे तब सामने सडक पर गर्द गुबार दिखाई दिया। यह देख उन दोनो में फिर बातचीत होने लगी।

※ स्पेन के कारडोवा प्रदेश में सीका मुसलमानों की पाक जगह है। सीका से मक्के का अर्थ पेशावर से रगून है यानी बहुत दूर।

किंज्योति—सनक्रू, देख आजही हम लोगोंका भाग्य खुलेगा। आज तू मेरा बाहुबल देखना। आज मैं ऐसी वीरता दिखाऊँगा जिसका वर्णन पुस्तकोंमें होगा और युगों तक रहेगा। सनक्रू, क्या यह गर्द गुबार तू देखता है? यह कई राष्ट्रों की अनगिनती सेनाओं के पैरों से उडी हुई धूल है। यह इधर ही आ रही है।

सनक्रू—अगर ऐसा है तो दोनों ओर से सेनाएँ आ रही हैं, क्योंकि वह देखिये दूसरी ओर भी ऐसी ही धूल उड रही है।

किंज्योतिने फिरकर देखा तो बात सच निकली। वह तब और भी खुश हुआ। उसने समझ लिया कि दोनों ओरसे दो सेनाएँ इस मैदानमें आ रही हैं। वह युद्ध, दुस्साहसिक कर्म, माया आदिकी जो बातें पुस्तकोंमें पढी थीं उन्हींकी कल्पना करने लगा।

उन दोनोंने जो गर्द गुबार देखा था वह असलमें भेड़ोंके कारण उठा था पहले तो कुछ नहीं दिखाई दिया पर पीछे भेद खुल गया। किंज्योतिने सेनाओं के विषयमें ऐसी दृढ़तासे कहा कि सनक्रूको भी विश्वास हो गया। उसने पूछा—"अब हमें क्या करना चाहिये। किंज्योतिने सेनाओंका नेता कौन-कौन है, दोनों राजाओं में किस बातकी लड़ाई

है इत्यादि बातें सनकूको बता दीं। फिर वहाँसे एक पहाड़ीपर चला गया। वहाँसे अच्छी तरह दिखाई देता था। उसने सेनाके सब बहादुरोंकी कहानियाँ सुना सनकूको आश्चर्य में डाल दिया। उसने यह भी कह डाला कि दुश्मनोंके अस्त्र-शस्त्र स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहे हैं। दोनों राष्ट्रोंके नाम भी बता दिये। एक में तो काले नुमिडियावासी, धनुर्विद्यामें सुप्रसिद्ध, परसियात्रासी और परथियावासी हैं जो वैसा ही लड़ते जैसा भागते हैं। दूसरे में योरपके सब राष्ट्र हैं।

सनकूने आँखे फाड-फाडकर इधर-उधर बहुत देखा पर कुछ दिखाई न दिया तो बोला—"आपने जिन जिनके नाम बताये उनमे मैं किसीको नहीं देख पाता हूँ।"

किंज्योति बोला—"क्या घोड़ोंकी हिनहिनाहट, तुरहियों और ढोलोंके शब्द नही सुनाई देते हैं?" सनकू बोला—"मुझे तो मैं-मैं भे-भेंके सिवा कुछ नहीं सुनाई देता।"

बात भी यही थी क्योंकि भेडें पास आचुकी थीं।

"तू इतना डर गया कि सुधबुध खो बैठा। डरता है तो हट जा। देख मेरी भुजाओंमें कितना बल है। मैं जिधर हो जाऊँगा उधर ही जीत होगी।" यह कह किंज्योति भाला तान बिजली की तरह घोडा दौडा पहाडीके नीचे उतर गया। सनकू पुकार-

पुकारकर कहने लगा—"ठहरिये-ठहरिये, चले आइये। जिन-पर आप चढाई करने जाते हैं वह सब भेड़ें और मेमने हैं।" पर वह न फिरा। गरजता हुआ भेड़ोंके झुंडोंमें पहुँच इस फुर्तीसे उनपर हाथ साफ करने लगा मानों वह सब उसके जानी दुश्मन हों।

गडरियोंने बहुत समझाया पर किंज्योति क्यों मानने लगा? जब समझानेसे कोई फायदा न देखा तब लाचार हो वह लोग भी गोफन निकाल बडे-बडे पत्थर उसके कानों पर मारने लगे। किंज्योति इसकी कुछ परवा न कर राजाको लडाईके लिये ललकारने लगा। इतने में एक पत्थर उसके पजर मे ऐसा लगा कि हड्डियाँ भीतर घुस गयी। ऐसा दुर्व्यवहार होता देख उसने कल्पना कर ली कि मैं मारा गया या सख्त घायल होगया हूँ। बस गिलास निकाल पानी पीने के लिये मुँहसे लगाया। एक घूँट भी न पी सका होगा कि एक पत्थर आकर उसके हाथ में लगा जिससे गिलास चूर-चूर हो गया। दो तीन दाँत टूट गये और दो उँगलियों में सख्त चोट लगी। बेचारा बहादुर जमीन पर गिर पडा। गडरिये उसके पास दौड आये। उसे मरा समझ जल्दी-जल्दी भेडें इकट्ठी कर और सात मरी भेड़ोंको उठा कुछ पूछे-ताछे बिना ही लवे होगये।

सनकू अब तक पहाड़ीपर खड़ा अपने मालिकका पागल-

पन देख रहा था। मनमें अपनेको कोस रहा था कि न मालूम किस बुरी घड़ीमें इसके साथ आया। गडरियोंके चले जाने पर वह नीचे उतरा। किंज्योतिकी बुरी दशा थी। पर होश हवास दुरुस्त था। सनकूने आकर कहा—"क्या मैंने नहीं कहा था कि यह फौज नहीं भेडे और मेमने हैं?" किंज्योति बोला—"मेरा दुश्मन चोर जादूगर कितनी जल्दी चीजें गायब कर देता और फिर ले आता है। मेरी जीतसे जलकर उसने आदमियोंकी फौज को भेड़े और मेमनेकी शकलमें बदल दिया।"

ग्यारहवाँ परिच्छेद

पिछले अध्याय के दुस्साहसिक कर्मके पश्चात् वह दोनों फिर चले। कुछ मील जाने के बाद सनकूके प्यास लगी। उसने सडकसे कुछ दूर जा गडरियों से दूध माँगा जो भेड़ें दुह रहे थे। सनकू उधर गया और इधर उसके मालिकने एक गाडी देखी जिस पर सरकारी झंडा उड़ रहा था और जो उसी तरफ आ रही थी जिधर किज्योति था। उसने कोई नयी मुहीम समझ सनकूको पुकारा और अपना टोप माँगा। सनकू आवाज़ सुनते ही तुरत आ पहुँचा।

किज्योतिने जब आवाज दी थी तब सनकू दही खरीद रहा था। मालिककी आवाजसे घबराकर वह निश्चय न कर सका कि दही कहाँ रखूँ। और वह उसे छोड़ना भी न चाहता था क्योंकि दाम दे चुका था। बस वह टोपमें ही दही ले चला आया। आने पर किज्योति बोला—"दोस्त लाओ, टोप दे दो। मैं नहीं जानता क्या है पर जो कुछ देखता हूँ उससे यही मालूम होता है कि मुझे हथियार पहनना ही पड़ेगा।"

सनकू झंडेदार गाडीको छोड़ और कुछ न देख कह

जा रहे हो ? यह किसकी गाडी है ? इसमें क्या है ? यह झंडा किसका है ?"

गाडीवान—गाडी तो मेरी है। इसमें दो सिंह हैं जिसे ओरनके जेनरल ने तोहफे के बतौर महाराजके पास भेजा है। यह झंडा सरकारी है जिससे मालूम हो कि यह माल सरकारी है।

किंज्योति—क्या यह वडे-वडे सिंह हैं ?

जो गाडीके आगे वैठा था वोल उठा—"इतने वडे हैं कि ऐसे आफ्रिकासे स्पेन कभी आये ही नही। मैं उनका रक्षक हूँ। मैं वहुतेरे सिहोंकी रखवाली कर चुका पर इतने वडे सिंह कभी नही देखे। यह नर-मादा दोनों हैं। नर तो अगले पिंजरेमे हैं और मादा पिछले में। अभी वह वडे भूखे हैं। दिनभर खानेके लिये उन्हें कुछ नहीं मिला है। आप कृपा कर हट जाइये मुझे जल्दी ठिकाने पर पहुँच इन्हे कुछ खिलाना है।"

इसपर किंज्योतिने जरा हँसकर कहा—"तुम्हारे सिंह मेरे लिये पिल्लेके वरावर हैं। सचमुच पिल्ले हैं। और वरावर ऐसे ही रहेंगे। जिसने इन्हें भेजा है वह देखले मैं सिहोंसे डरनेवाला नही हूँ। उतर पडो मेरे सच्चे दोस्त, तुम रक्षक हो इसलिये इन्हें पिंजरेसे वाहर निकाल दो। मैं उन्हें खुले मैदान में वता दूँगा कि वहादुर किंज्योति लामनचावाला कौन है।"

गाडीवान इस हथियारवन्द भूतकी दृढता देख वोला—

जा रहे हो ? यह किसकी गाडी है ? इसमें क्या है ? यह झडा किसका है ?"

गाडीवान—गाडी तो मेरी है। इसमें दो सिंह हैं जिसे ओरनके जेनरल ने तोहफे के बतौर महाराजके पास भेजा है। यह झडा सरकारी है जिससे मालूम हो कि यह माल सरकारी है।

किज्योति—क्या यह बडे-बडे सिंह हैं ?

जो गाडीके आगे बैठा था बोल उठा—"इतने बडे हैं कि ऐसे आफ्रिकासे स्पेन कभी आये ही नहीं। मैं उनका रक्षक हूँ। मैं बहुतेरे सिंहोंकी रखवाली कर चुका पर इतने बडे सिंह कभी नही देखे। यह नर-मादा दोनों हैं। नर तो अगले पिंजरेमें हैं और मादा पिछले मे। अभी वह बडे भूखे हैं। दिनभर खानेके लिये उन्हें कुछ नहीं मिला है। आप कृपा कर हट जाइये मुझे जल्दी ठिकाने पर पहुँच इन्हे कुछ खिलाना है।"

इसपर किज्योतिने जरा हँसकर कहा—"तुम्हारे सिह मेरे लिये पिल्लेके बराबर हैं। सचमुच पिल्ले हैं। और बराबर ऐसे ही रहेंगे। जिसने इन्हें भेजा है वह देखलें मैं सिंहोंसे डरने वाला नहीं हूँ। उतर पडो मेरे सच्चे दोस्त, तुम रक्षक हो इसलिये इन्हें पिंजरेसे बाहर निकाल दो। मैं उन्हें खुले मैदान मे बता दूँगा कि बहादुर किज्योति सामनवावाला कौन है।"

गाडीवान इस हथियारबन्द भूतकी दृढता देख बोला—

सिंहने पहले तो पिंजरे में चक्कर लगाये, एक पंजा फैलाया और फिर पूरे तौरसे अपने शरीरको तान दिया। फिर जम्हाई लेने के लिये धीरे-धीरे मुँह फैलाया। आध गज लंबी जीभ निकाल मुँह और आँखें चाटकर साफ़ की। इसके बाद पिंजरेके बाहर सिर निकाल चमकती हुई आँखोंसे चारों ओर देखने लगा। बड़े-बड़े दिलेरोंके दिल दहलाने के लिये यह नजारा काफ़ी भयावना था।

किज्योति बड़े ध्यानसे उसे देख रहा था। वह इसी ताकमें था कि सिंह पिंजरेसे निकले और मैं दो टुकड़े कर दूँ। उसके पागलपनने तो यहाँ तक सोच डाला था, पर वह उदार सिंह घमंडी होने के बदले पूरा भला मानस ही निकला। उसने किज्योतिकी जरा भी परवा न की। उसकी ओर देख मुँह फेर लिया और बड़ी बेपरवाई से पिंजरेमें जा लेटा। किंज्योतिने यह देख रक्षकसे उसे खींचकर बाहर निकालने के लिये कहा। उसने कहा—"मैं ऐसा नहीं करने का अगर मैं कोंचूँगा तो वह पहले मुझे ही खा जायगा। बहादुर साहब, आप इतने से ही संतोष कर लीजिये हिम्मत दिखाने के लिये यही बहुत है। अब ज्यादा क़िस्मत मत आजमाइये। यह तो सिंहकी मरजी है बाहर आवे चाहे नहीं। जब अब तक नहीं निकला तब आज और नहीं निकलेगा।"

किंज्योत बोला—"चाहे जितना बड़ा हो मैं डरता नहीं। तू तो डरके मारे उन्हें आसमानसे भी बड़ा समझता है। सनकू, तू चला जा। अगर मैं मर गया तो पुराने कौल-क़रार के मुताबिक राजकुमारी दर्शनीयाके पास चला जाना—बस अब कुछ न कहूँगा।"

सनकूने देखा कि किंज्योति मानता नही तो गधेपर चढ भागा। गाडीवान भी रक्षकोंको ले पहलेही भाग चुका था। सिंहोंके निकलनेके पहले जिससे जितनी दूर जाते बना चला गया। सनकू अपने मालिकके लिये रोता था। उसे विश्वास था कि किंज्योति जीता न बच सकेगा। वह अपने नसीब और उस कुघडी को दोष देता था, जिसमें इसकी नौकरी करनेका इरादा किया। चाहे वह जितना ही आँसू गिराता हो पर उसने गाडीके पाससे दूर निकल जाने में कसर न की।

रक्षक सिंहोंको छोडनेके लिये तैयार हो गया। किंज्योतिने पैदलही मुक़ाबला करना अच्छा समझा, क्योंकि इसमें वायुवेगके भडक जानेका भय न था। बस भाला फेंक वह घोडेसे कूद पडा। ढाल लगा तलवार निकाल ली। फिर धीरे-धीरे अजीब बहादुरी और दिलेरीसे राजकुमारी दर्शनीयापर अपनेको श्रद्धा-पूर्वक उत्सर्ग करता, पिंजरों तक चला गया। रक्षकने पहले पिंजरेका फाटक खोल दिया। इसमें बहुत बडा भयानक सिंह था

मेंत्रिनों सारासीसका मशहूर बादशाह था। पेनके किसी बहादुरने उनका ताज छीन लिया था। किज्योति जिन किस्सोंको बराबर याद रखता था उनमे यह भी एक था।

किज्योति फिर बोला—"सनकू, क्या तू अब तक घोड़ेपर सवार उस आदमीको नही देखता, जिसके सिर सोनेका ताज है?"

सनकू—हाँ देखता तो हूँ कि एक आदमी मेरी तरह भूरे गधेपर सवार है और उसके सिरपर कोई चीज़ चमक रही है।

किज्योति—वह चमकनेवाली चीज़ मेंत्रिनोका ताज ही है। वह गधा नहीं घोडा है। खैर तू हट जा और मुझे उससे भिड़ने दे। देखना कैसी फुर्ती से मैं उस ताज पर क़ब्ज़ा जमाता हूँ, जिसके लिये इतने दिनोंसे तरस रहा था।

किज्योतिने जिस आदमीको घोड़ेपर सवार और ताज पहने देखा था, उसका किस्सा भी सुन लीजिये। वहाँ दो छोटे-छोटे गाँव थे, एक इतना छोटा था कि वहाँ न दुकान थी और न हज्जाम। लेकिन दूसरेमें दोनों थे। बड़े गाँवसे ही छोटे गाँवका काम चलता था। हज्जाम हजामत भी बनाता और जर्राही भी करता था। हज्जाम छोटे गाँव जा रहा था।

बारहवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन किंज्योति और सनकूराव बहादुरोंकी रीतके अनुसार जो रास्ता पसद आ गया उसी से चल पडे। कुछ दूर जानेके बाद किंज्योतिको एक आदमी घोड़ेपर उसकी तरफ आता दिखाई दिया। उसके सिर पर ऐसी कोई चीज थी, जो सूर्यकी किरणोंसे सोनेकी भाँति चमक रही थी। उसने देखते ही सनकूसे कहा—कोई कहावत झूठ नहीं है, क्योंकि कहावतें वह वाक्य हैं, जो अनुभव से बने हैं। और यही सब विज्ञानों की जड है। विशेषकर यह कहावत तो बिलकुल ठीकहै कि एक द्वार बद हुआ तो दूसरा खुल गया। यह मैं इसलिये कहता हूँ कि कल भाग्य ने भेडों के झुड दिखा धोखा दे दिया, तो आज निश्चित रूप से दूसरा बडा द्वार खोल दिया। अगर यहाँ मैं चूक गया तो यह मेरा ही दोष होगा। अगर मेरी भूल न हो, तो मैं कह सकता हूँ कि उस आदमी के सिर*पर मेंब्रिनों का टोप है जो इधर ही आ रहा है।

* मुसलमान योद्धा जो क्रिस्तानों से पलेस्टाइन और एशिया माइनरमें लड़े थे।

मेंब्रिनो सारासीसका मशहूर बादशाह था। पेनके किसी बहादुरने उनका ताज छीन लिया था। किज्योति जिन क़िस्सोंको बराबर याद रखता था उनमे यह भी एक था।

किज्योति फिर बोला—"सनकू, क्या तू अब तक घोडेपर सवार उस आदमीको नही देखता, जिसके सिर सोनेका ताज है?"

सनकू—हाँ देखता तो हूँ कि एक आदमी मेरी तरह भूरे गधेपर सवार है और उसके सिरपर कोई चीज चमक रही है।

किज्योति—वह चमकनेवाली चीज मेंब्रिनोका ताज ही है। वह गधा नहीं घोडा है। खैर तू हट जा और मुझे उससे भिड़ने दे। देखना कैसी फुर्ती से मैं उस ताज पर कब्जा जमाता हूँ, जिसके लिये इतने दिनोंसे तरस रहा था।

किज्योतिने जिस आदमीको घोड़ेपर सवार और ताज पहने देखा था, उसका क़िस्सा भी सुन लीजिये। वहाँ दो छोटे-छोटे गाँव थे, एक इतना छोटा था कि वहाँ न दुकान थी और न हज्जाम। लेकिन दूसरेमें दोनों थे। बड़े गाँवसे ही छोटे गाँवका काम चलता था। हज्जाम हजामत भी बनाता और जर्राही भी करता था। हज्जाम छोटे गाँव जा रहा था।

उसके पास पीतल की चिलमची थी। रास्तेमें बूँदे पडने लगीं इसलिये उसने उसे सिर पर रख लिया था। वरसा बंद होने पर भी वह सिरपर रखे ही चलता रहा। वह चिलमची नई और साफ होनेके कारण दूरसे चमकती थी। सनकूने ठीक ही कहा था कि वह भूरे गधे पर सवार है। लेकिन किंज्योतिने हज्जामको बहादुर, गधेको अबलक घोडा और चिलमचीको ताज समझ लिया था। क्योंकि वह जो कुछ देखता-सुनता उसे अपनी कल्पना के अनुसार ही अनुमान कर लेता था।

किंज्योति उस हज्जामकी तरफ बडी तेजी से बढा। उसने निश्चय कर लिया था कि पहुँचते ही उसे मार गिराऊँगा। ललकारकर कहा—"मेरी चीज मुझे दे दे या मरने को तैयार हो जा।" हज्जामको सपनेमें भी इस आफत का खयाल न था। वह हक्का-बक्का हो गया। समझा कि भूतने घेर लिया है। बचाव कोई उपाय न देख गधेसे कूद पडा। उसके पैरोंने ज्योंही जमीन छुई, त्योंही वह सिरपर पैर रख ऐसा भागा कि हवा भी उसका पीछा न कर सकी।

हज्जाम जानके डरसे चिलमची फेंककर भागा था। किंज्योति इससे बडा प्रसन्न हुआ। सनकूसे उठा लाने के कहा। सनकू [illegible] लाया, तो उसने सिरपर रख लिया।

है, जाननेके लिये उसे

घुमाता-घुमाता बोला—"जिस राजाके लिये यह बना था उसका सिर बेतरह बड़ा होगा। सबसे बुरी बात तो यह है कि इस ताजके तीन हिस्से गायब हैं।" सनक़ू ने देखा कि चिलमची ही ताज बन रही है, तो उसे हँसी आ गयी पर किंज्योति का क्रोध स्मरण कर उसने हँसी रोक ली। किंज्योति ने पूछा—"सनक़ू, क्या हँसता है ?"

सनक़ू—कुछ नहीं। जिस राजा का यह टोप है, उसका सिर कितना बड़ा होगा, यही सोचकर हँसी आ गयी। यह देखने में तो खासी चिलमची मालूम होती है।

किंज्योति—इसका कारण क्या है मैंने जान लिया। सुनो। वह मशहूर ताज जिसके हाथ लगा उसने पक्का सोना समझ गला दिया। डेढ़ हिस्सा तो खाद निकल गयी और बाक़ीका उसने ताज बनवा लिया, जिसे तू चिलमची कहता है। कुछ हर्ज नहीं। मैं इसे ठीक करलूँगा।

सनक़ू—अच्छा यह तो बताइये, इस अबलक घोड़ेका क्या करें, जो गधे-सा मालूम होता है और जिसे वह कमीना हुज़ूर से हारकर छोड़ गया है। जिस तेजीसे वह भागा है इससे तो मालूम होता है कि लौटनेका नहीं। मैं दादीकी क़सम खाकर कहता हूँ कि अबलक अव्वल दरजेका जानवर है।

उसके पास पीतल की चिलमची थी। रास्तेमें बूँदें पडने लगीं इसलिये उसने उसे सिर पर रख लिया था। बरसा बंद होने पर भी वह सिरपर रखे ही चलता रहा। वह चिलमची नई और साफ होनेके कारण दूरसे चमकती थी। सनकूने ठीक ही कहा था कि वह भूरे गधे पर सवार है। लेकिन किंज्योति ने हज्जामको बहादुर, गधेको अबलक घोडा और चिलमचीको ताज समझ लिया था। क्योंकि वह जो कुछ देखता-सुनता उसे अपनी कल्पना के अनुसार हो अनुमान कर लेता था।

किंज्योति उस हज्जामकी तरफ बडी तेजी से बढ़ा। उसने निश्चय कर लिया था कि पहुँचते ही उसे मार गिराऊँगा। ललकारकर कहा—"मेरी चीज मुझे दे दे या मरने को तैयार हो जा।" हज्जामको सपनेमें भी इस आफत का खयाल न था। वह हका-बका हो गया। समझा कि भूतने घेर लिया है बचावका कोई उपाय न देख गधेसे कूद पडा। उसके पैरोंने ज्योंही जमीन छुई, त्योंही वह सिरपर पैर रख ऐसा भागा कि हवा भी उसका पीछा न कर सकी।

जानके डरसे चिलमची फेंककर भागा था। बड़ा प्रसन्न हुआ। सनकूसे उठा लाने के लिये उठा लाया, तो उसने सिरपर रख लिया। इसका किधर है, जाननेके लिये उसे घुमाने लगा।

घुमाता-घुमाता बोला—"जिस राजाके लिये यह बना था उसका सिर बेतरह बड़ा होगा। सबसे बुरी बात तो यह है कि इस ताजके तीन हिस्से गायब हैं।" सनकू ने देखा कि चिलमची ही ताज बन रही है, तो उसे हँसी आ गयी पर किञ्योति का क्रोध स्मरण कर उसने हँसी रोक ली। किञ्योति ने पूछा—"सनकू, क्या हँसता है ?"

सनकू—कुछ नहीं। जिस राजा का यह टोप है, उसका सिर कितना बड़ा होगा, यही सोचकर हँसी आ गयी। यह देखने में तो खासी चिलमची मालूम होती है।

किञ्योति—इसका कारण क्या है मैंने जान लिया। सुनो। वह मशहूर ताज जिसके हाथ लगा उसने पक्का सोना समझ गला दिया। डेढ़ हिस्सा तो खाद निकल गयी और बाक़ीका उसने ताज बनवा लिया, जिसे तू चिलमची कहता है। कुछ हर्ज नहीं। मैं इसे ठीक करलूँगा।

सनकू—अच्छा यह तो बताइये, इस अबलक घोड़ेका क्या करें, जो गधे-सा मालूम होता है और जिसे वह कमीना हुजूर से हारकर छोड़ गया है। जिस तेजीसे वह भागा है इससे तो मालूम होता है कि लौटनेका नहीं। मैं दादीकी क़सम खाकर कहता हूँ कि अबलक अव्वल दरजेका जानवर है।

उसके पास पीतल की चिलमची थी। रास्तेमें बूँदें पड़ने लगीं इसलिये उसने उसे सिर पर रख लिया था। बरसा बंद होने पर भी वह सिरपर रखे ही चलता रहा। वह चिलमची नई और साफ होनेके कारण दूरसे चमकती थी। सनकूने ठीक ही कहा था कि वह भूरे गधे पर सवार है। लेकिन किंज्योति-ने हज्जामको बहादुर, गधेको अबलक घोड़ा और चिलमचीको ताज समझ लिया था। क्योंकि वह जो कुछ देखता-सुनता उसे अपनी कल्पना के अनुसार ही अनुमान कर लेता था।

किंज्योति उस हज्जामकी तरफ बड़ी तेजी से बढ़ा। उसने निश्चय कर लिया था कि पहुँचते ही उसे मार गिराऊँगा। ललकारकर कहा—"मेरी चीज मुझे दे दे या मरने को तैयार हो ज।" हज्जामको सपनेमें भी इस आफत का खयाल न था। वह हक्का-बक्का हो गया। समझा कि भूतने घेर लिया है बचावका कोई उपाय न देख गधेसे कूद पड़ा। उसके पैरोंने ज्योंही जमीन छुई, त्योंही वह सिरपर पैर रख ऐसा भागा कि हवा भी उसका पीछा न कर सकी।

हज्जाम जानके डरसे चिलमची फेंककर भागा था। किंज्योति इससे बड़ा प्रसन्न हुआ। सनकूसे उठा लाने के लिये कहा। सनकू उठा लाया, तो उसने सिरपर रख लिया। इसका अगला हिस्सा किधर है, जाननेके लिये उसे घुमाने लगा।

घुमाता-घुमाता बोला—"जिस राजाके लिये यह बना था उसका सिर बेतरह बडा होगा। सबसे बुरी बात तो यह है कि इस ताजके तीन हिस्से गायब हैं।" सनकू ने देखा कि चिलमची ही ताज बन रही है, तो उसे हँसी आ गयी पर किंज्योति का क्रोध स्मरण कर उसने हँसी रोक ली। किंज्योति ने पूछा—"सनकू, क्या हँसता है ?"

सनकू—कुछ नहीं। जिस राजा का यह टोप है, उसका सिर कितना बडा होगा, यही सोचकर हँसी आ गयी। यह देखने मे तो खासी चिलमची मालूम होती है।

किंज्योति—इसका कारण क्या है मैंने जान लिया। सुनो। वह मशहूर ताज जिसके हाथ लगा उसने पक्का सोना समझ गला दिया। डेढ हिस्सा तो याद निकल गयी और बाक़ीका उसने ताज बनवा लिया, जिसे तू चिलमची कहता है। कुछ हर्ज नहीं। मैं इसे ठीक करलूँगा।

सनकू—अच्छा यह तो बताइये, इस अबलक घोड़ेका क्या करें, जो गधे-सा मालूम होता है और जिसे वह कमीना हुजूर से हारकर छोड़ गया है। जिस तेजीसे यह भागा है इससे तो मालूम होता है कि लौटनेका नहीं। मैं दाढ़ीकी कसम खाकर कहता हूँ कि अबलक अव्वल दरजेका जानवर है।

क्विज्योति—यह मेरी आदत नहीं कि जिसे जीतूँ उसे लूट लूँ। और ऐसा नियम भी नही है। हारनेवालों के घोड़े छीनकर उन्हें पैदल चलाना अनुचित है। हाँ, अगर मेरा घोडा मर जाता, तो मैं उसका जरूर ले लेता। सनकू जिसे तू घोडा कह, गधा कह, या जो मनमें आवे सो कह उसे यहीं छोड दे हम लोग जब दूर निकल जायँगे, तब उसका मालिक उसे ले जायगा।

सनकू—राम जाने वह ले जायगा या नहीं। पर क्या मेरे लिये यह अच्छा नहीं है कि मैं अपने गधे से उसे बदल लूँ, क्योंकि मेरा गधा वैसा अच्छा नही है? बहादुरीका दस्तूर तो बडा कडा है। क्या घोडेसे घोड़ा बदलनेकी चाल नहीं है? क्या घोडेका सामान बदलना भी नाजायज है?

क्विज्योति—इस बारे में साफ तौर से कुछ नही कह सकता। जब तक कोई दूसरी सूचना न मिले तब तक के लिये कहता हूँ कि अगर तुझे इसकी सख्त जरूरत हो, तो बदल सकता है।

सनकू—जरूरत तो इतनी है कि क्या बताऊँ? हाँ, खास मेरे बदन के लिये ऐसी कुछ जरूरत नहीं है। इतना कह वह सामान बदलने लगा। उसने सोचा कि और कुछ नहीं, तो इस

नये साज से अपने गधेकी सूरत और कीमत तो बढ ही जायगी।

हज्जामके गधे पर खाने-पीनेका जो सामान था उसे पेटमे रख वह लोग फिर आगे चले। सनकूने बोलनेकी आज्ञा माँगी और वह उसे मिल गयी।

सनकू—कुछ दिनों से मैं यही सोच रहा हूँ कि इधर-उधर रेगिस्तान, जगल, मैदानमें भटकनेसे क्या फायदा है? हाँ, यह बात जरूर है कि आपने बहुत-सी विपत्तियाँ झेल डालीं पर इसका जाननेवाला और देखनेवाला कोई न मिला। इसलिये मेरी राय नाकिस है कि अगर हम लोग किसी ऐसे बड़े बादशाह या शाहजादे के यहाँ काम करें जो लडाई झगडेमें फँसे हो तो बहुत अच्छा हो। आपकी रायकी मैं पूरी इज्जत करता हूँ। शाही काममें आप अपना साहस और बुद्धि मजे में दिखला सकते हैं। बादशाह हम लोगोंके हुनर देखेंगे, तो इनाम दिये विना न रहेंगे। फिर आप भी अपना इतिहास लिखवानेसे बाज न आवेंगे। मैं अपने बारेमें कुछ नहीं कहा चाहता, पर इतना जरूर कहूँगा कि अगर मुसाहयोंके कामों का जिक्र कर देना बहादुरोंके दस्तूरके खिलाफ न हो तो मेरी बात भी उसमें लिखी ही जायगी।

किंज्योति—तेरा कहना सरासर गलत नहीं है। लेकिन दर-

बारमें दाखिल होनेके पहले बहादुर सवारको देश-विदेश घूमना और मुहीम जीतना चाहिये, जिसमें इतना नाम होजाय कि वह जिस दरबारमें पहुँचे, वहीं सब लोग उसे पहचान ले। इस तरह वह नगरमें प्रवेश करेगा, तो लडके उसका नाम ले-लेकर शोर करेंगे। यह शोर-गुल सुनकर बादशाह अपने महलके भरोखेमें जा बहादुर सवारको उसके बख्तरसे पहचान, बोल उठेगा—"यही मेरा बहादुर है। इस वीर रत्नका स्वागत करो।" उसके हुक्म से स्वागत करने सब लोग जायँगे और खुद बादशाह वो सीढियाँ उतर उसे गलेसे लगा लेगा, सलाम करेगा और चुबन करेगा। फिर हाथ पकड उसे महल में लेजायगा। जहाँ मलिका अपनी खूबसूरत शाहजादियोंके साथ रहेंगी।

किंज्योतिने इस तरह दरबार और अपने कल्पित स्वागतका वर्णन कर डाला, पर सनकूको कुछ पसद न आया। लेकिन जब किंज्योतिने कहा कि मेरा व्याह शाहजादीसे होगा और शाहजादी अपनी सहेली की शादी मुसाहबसे करा उसे रावराजा बना देगी, तो सनकू बोल उठा—"यही तो मेरी लालसा है और बराबर रहेगी। मैं बहुत जल्द अपनेको राव राजा के योग्य बना लूँगा।"

किंज्योति—इसकी जरूरत नहीं। मैं शाहजादा बनूँगा तो

तुझे आसानीसे रावराजा बना सकूँगा। फिर चाहे कोई कितना भी मनमें कुढ़ता रहे पर मुँह पर तो तुझे सब जनाब और हुजूर ही कहेंगे।

सनकू—क्या आप समझते हैं कि मैं उस पदकी मर्यादा न रख सकूँगा।

किंज्योति—क्यों न रख सकेगा, पर तुझे अकसर दाढी बनानी पडेगी क्योंकि तेरी दाढी ऐसी रूखी और उलझी हुई है कि अगर रोज न बनवावेगा तो लोग दूरसे ही समझ लेंगे कि यह रावराजा नहीं है।

सनकू—यह कौन भारी काम है। एक हज्जाम रख लूँगा। जरूरत होगी, तो वह भी घोडेपर साथ चलेगा। एक बार मैं एक शहर गया था। वहाँ एक बडे नवाबको दिखाकर लोगोंने कहा कि यह घोडेपर कभी आगे कभी पीछे बराबर जाता है। उसके पीछे एक सवार भी रहता है, जो नवाब के पीछे-पीछे घूमता है। इसी से वह नवाबकी दुम कहलाता है। मैं भी हज्जामको अपनी दुम बना लूँगा।

किंज्योति—अच्छी बात है, तू भी अपने पीछे एक नाई ले चला करना। आज तक किसी ने ऐसा नहीं किया है। तू ही पहला नाईदार रावराजा होगा। सचमुच घोड़ेपर जीन रखनेसे दाढी मूड़ना बड़े महत्त्व का काम है।

सनकू—खैर नाईका काम मेरे ऊपर छोड़िये। आप अपनेको राजा और मुझे रावराजा बनानेका अब उपाय कीजिये।

किज्योति—बहुत अच्छा।

इतना कह उसने नजर उठा जो कुछ देखा उसका वर्णन आगे किया जायगा।

तेरहवाँ परिच्छेद

किंज्योतिने नजर उठायी तो क्या देखा कि दस बारह आदमी पैदल आ रहे हैं, जिनकी गर्दनें एक लम्बी जंजीरसे मालाकी तरह बँधी हैं, और हथकड़ियोंसे जकड़े हैं। उनके साथ दो सवार और दो पैदल सिपाही हैं। सवारोंके पास बदूकें और सिपाहियोंके पास तलवारें और बरछे हैं। सनकू चिल्ला उठा—"यह तो जहाजमें काम करनेवाले गुलामों का गिरोह है। इन्हें बादशाहने जहाजपर काम करनेके लिये जबरदस्ती भेजा है।" किंज्योति यह सुनकर बोला—"यह कैसी जबरदस्ती है? बादशाहका किसी के साथ जबरदस्ती करना क्या सम्भव है?"

सनकू—मैं यह नहीं कहता। मेरे कहने का मतलब यह है कि यह लोग कानूनकी रूसे क़ैदी हैं और जहाजमें काम करने के लिये पाबन्द हैं।

किंज्योति—तो इसका यही मतलब है न कि यह लोग अपनी खुशीसे नहीं जबरदस्ती भेजे जाते हैं।

सनकू—जी हाँ, यही बात है।

मदद् करनेकी ठान ली। जो काम गुडसे निकलता हो उसमें विष न डालना चाहिये। इसलिये मैं तुम्हारे सवारोंसे अर्ज करता हूँ कि वह तुम्हें छोड दे और जाने दें। बादशाहकी गुलामी के लिये बहुतेरे आदमी हैं। जिन्हे भगवान् और प्रकृति ने स्वाधीन बनाया है, उन्हें गुलाम बनाना बडी बेरहमी है। अपने-अपने कर्मोंका उत्तर लोग परलोकमें आप ही दे लेगे। यह ठीक नहीं कि ईमानदार आदमी दूसरोंकी हत्या व्यर्थ ही करें। सवारो! मैं शातिपूर्वक यह प्रार्थना करता हूँ, आशा है, आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे। अगर नहीं करेंगे, तो मेरी तलवार आपको इसके लिये लाचार करेगी।"

बडे सवारने कहा—"अच्छी दिल्लगी है। मैं भला कैदियोंको कैसे छोड सकता हूँ। न मुझे छोडनेका अख़्त्यार है और न आपको छुडानेका। जनाब, अपना रास्ता लीजिये और अनधिकार चर्चा छोडिये।

किंज्योति "पाजी, कमीने" कह उसपर टूट पडा। सवारको सम्हलनेका भी मौका न मिला। वह किंज्योतिके भालेसे बेतरह घायल हो जमीन पर गिर पडा। इस अचानक मुठभेडसे सब घबरा गये। सिपाही तलवारे खेंच-खेंचकर दौडे। किंज्योति भी इनकी ताक में धीरतापूर्वक खडा था। सब कैदी भागनेका अच्छा मौका देख जंजीर न तोड डालते तो बेचारे

किंज्योति की बुरी हालत हो जाती। पर ऐसी गड़बड हुई कि दोनों सिपाही किंज्योतिको छोड कैदियोंकी ओर झुके, पर नतीजा कुछ और ही निकला।

इधर सनकूने सबसे निडर कैदीको खोल दिया। उसका नाम पसामोंटी था। उसने तुरत घायल सवारकी तलवार और बदूक छीन ली। फिर दूसरे सवारपर बदूक तान, बाकी कैदियोंको निकल भागने दिया। कैदी सब ईंट पत्थर फेंकते भागते जाते थे। पसामोंटी बराबर बदूकसे धमकाता रहा पर छोडी नहीं।

सनकू बहुत घायल हो गया था। उसने किंज्योतिसे जहाँ तक हो, जल्द भाग चलने के लिये कहा। पर बहादुरने उसकी बात पर ध्यान न दे, कैदियोंको इकट्ठा कर कहा—"उपकारोंके लिये कृतज्ञता प्रकट करना अच्छे कुलमें जन्म लेनेवालों-का स्वभाव है। कृतघ्नता बडा भारी पाप है। सज्जनो! मैं इसलिये यह कहता हूँ कि मैंने तुम्हारा बडा उपकार किया है। इसके बदले मैं बस यही चाहता हूँ कि मैंने जो जजीर तुम्हारी गरदनोंसे खोली है, उसे ले टोबोसो चले जाओ और वहाँ जाकर परम सुदरी राजकुमारी दर्शनीयाके सामने उपस्थित हो, कहो कि हम किंज्योतिके भेजे आये हैं। यहाँका सारा वृत्तात सुनाकर जहाँ मन हो वहाँ चले जाना।"

इस पर पसामोंटी बोला—"हम लोगोंका एक साथ रहना फिर अपनेको कैदी बनाना है। आपकी जीतके लिये हम लोग भगवानसे प्रार्थना करेंगे लेकिन टोबोसो जाना हमें मजूर नहीं है।"

यह सुन किंज्योति बिगड़कर बोला—"तो सुनले पाजी, मैं कसम खाकर कहता हूँ कि तुझे दोनों पैरोंके बीच दुम लटकाये और अकेला सारी जजीर पीठ पर लादे टोबोसो जाना पड़ेगा।"

पसामोंटी उतावला सा हो रहा था और यह भी समझ चुका था कि किंज्योति जरा सनकी है। बस उसने किंज्योतिकी बातें सुन साथियोंको इशारा किया। वह लोग जरा पीछे हट ईंट पत्थरोंकी ऐसी घोर वर्षा करने लगे कि किंज्योति न अपनी ढाल निकाल सका, और न एड लगा वायुवेगको आगे ही बढ़ा सका। पर सनकू अपने गधेके पीछे खड़ा हो मजेमें बच गया था।

किंज्योति चोट खा गिर पड़ा। उसके गिरते ही पसामोंटीने उस पर हमला किया। उसके सिरसे चिलमची उतार जमीन पर दे मारा, जिससे वह टुकड़े टुकड़े हो गयी। बहादुरकी अच्छी तरह कुटी कर लबादा उतार लिया। पाजामा भी ले लेता, पर मिलम से उलझ वह बच गया।

उसने सनकूका भी लाबादा न छोड़ा। वह बिचारा सिर्फ कुर्ता पहने रह गया। आपस मे हिस्सा बाँटकर पकड़े जानेके डरसे सबके सब इधर उधर चपत हो गये।

गधा, घोड़ा, सनकू और किंज्योति बस यही चार प्राणी वहाँ रह गये। गधा चितासे मूड झुकाये, कभी कभी कान हिलाता और समझता था कि अभी पत्थरोंकी वर्षा समाप्त नहीं हुई है। घोड़ा पाँव फैलाये मालिकके पास पडा था। वह भी पत्थरोंकी राह देख रहा था। "एकवस्त्रा" सनकू सवारोंके डरसे पानी हो रहा था। किंज्योतिकी तबीयत भी इस बातसे खट्टी हो रही थी, कि जिनका मैंने उपकार किया वही इस तरह पेश आये।

चौदहवाँ परिच्छेद

किंज्योतिने अपनी दशा देख सनकूसे कहा—"अकसर लोगोंको कहते सुना है कि नीचोंके साथ नेकी करना साँपोंको दूध पिलाना है। अगर तेरा कहा मान लेता, तो यह आफत न आती। लेकिन अब तो जो होना था हो चुका। अब मुझे संतोष कर आगेके लिये सावधान हो जाना चाहिये।"

सनकू—हुजूर, तो मेरी बात ही नहीं मानते मानों मैं आपका दुश्मन हूँ। लेकिन मेरी मानेंगे तो बडी बडी आफतोंसे अब भी बच जायँगे। अच्छा सुनिये। बहादुर भी पुलिसके चगुल-से नही बच सकते। वह उनकी कुछ भी परवा नहीं करती है, मेरे कानोंमें पुलिसके तीरोंकी आवाज सुनाई दे रही है।

सनकू यह सोचकर भयभीत हो रहा था कि कैदियोंके रक्षक जल्दी ही ज्यादा सिपाही लेकर आते होंगे।

किंज्योति—सनकू, तू स्वभावसे ही नामर्द है। लेकिन जिसमें तू मुझे जिद्दी न समझे और मैं तेरी बात नहीं मानता हूँ, यह भी तू न कहे, इसलिये अबके तेरी बात मान लूँगा और जिस बातका तुझे डर है, उससे बचनेके लिये तैयार हूँ।

पर एक शर्त है। वह यह कि तू किसीसे यह न कहे कि मैं डर गया। मैं तो तेरी बात रखनेको ऐसा करता हूँ, कुछ डरसे नहीं।

सनकू—हुजूर, बचना भागना नहीं है। और जहाँ अंदाजसे ज्यादा जोखिम हो वहाँ ठहरना भी अक्लमंदी नहीं।

बस किंज्योति सनकूरावका अनुयायी बन, काले पहाड़ पर चला गया। वह बहुत दूर न था। सनकूने वहीं छिपकर दो चार रोज रहना विचारा था।

पहाड़के ऐसे स्थानमें वह दोनों जा पहुँचे, जो सुनसान और उजाड़ सा था। किंज्योतिने अपनी प्रेयसी राजकुमारी दर्शनीयाके निमित्त व्रत और प्रायश्चित्तका संकल्प कर डाला। फिर राजकुमारी के नाम एक ऐसी चिट्ठी लिखनेका विचार किया जिसमें आज तकके दुस्साहसिक कर्मों का वर्णन हो। उसने सनकूको चिट्ठी ले जानेके लिये कहा। वह बड़ी खुशीसे तैयार हो गया, क्योंकि वह ऐसी ही जगह जाना पसंद करता था, जहाँ पेटपूजाका अच्छा प्रबंध हो। यह सच है कि दर्शनीया नामकी कोई राजकुमारी इस धराधाम पर न थी, पर तो भी इसकी चिंता न बहादुरको और न मुसाहबको ही हुई। सनकूराव वायुवेगपर सवार हो चल दिया और अपने मालिकको व्रत और प्रायश्चित्त करनेके लिये वापिस आने तक वहीं छोड़ गया।

कैसे लगता ? वह तो किज्योतिके पास ही रह गयी थी। न उसे देनेकी याद रही-और न इसे लेनेकी।

पाकेटबुक न मिलनेसे सनकूका अजब हाल था। उसने सारा बदन टटोल डाला, दाढी नोंच डाली और मुँह पीट डाला, जिससे खून निकल आया, पर नोटबुक न मिली। पादडीने समझा बुझाकर शात किया और कहा कि तुझे बातें याद हों तो कह जा मैं लिख दूँगा।

सनकू चिट्ठीका मजमून याद करनेके लिये सिर खुजलाने लगा। पहले एक पैरसे खडा हो गया, फिर दोनोंसे। कभी जमीनकी तरफ देखता, कभी आसमानकी तरफ। कभी दाँतोंसे उँगलियोंके नाखून काटता। वह दोनों उसके मुँहकी ओर देख रहे थे। बहुत देरके बाद सनकूने मुँह खोला—"मैं चिट्ठी याद कर सकूँ तो फाँसी पडूँ—लेकिन शुरू में लिखा था—"सरीमती महलासरमनी—"हज्जाम बीचमें ही बोल उठा—"सरीमती महलासरमनी नहीं "श्रीमती महिलाशिरोमणि।" सनकू बोला—"हाँ हाँ यही है।" इसके बाद वह फिर कहने लगा—"आहत और दलित वीर श्रीमतीका कर चुम्मन करता है, वज्र हृदया अकृतज्ञा सुदरो" इसके बाद याद नहीं क्या है, पर अंतमें है—"आजीवन तेरा दु खी व्याकुल वीर—"

सनकूकी ऐसी तीव्र स्मरणशक्ति देख उन दोनोंने प्रसन्न हो

पंद्रहवाँ परिच्छेद

ा काले पहाडपर पहुँचे तो क्या देखते हैं कि
नों के बीच बैठा है। कपडे पहने है, पर पूरे हथि-
ये है। सनकूने दूरसे ही दुरतियाको बता दिया,
-॥ हैं, तो उसने घोडेको एड लगायी। उसके साथ
॥ये हज्जामराम भी थे। किज्योतिके पास गए
हज्जामने दुरतियाको घोड़ेसे उतारा। वह उतरसे
ज्योतिके पैरोके पास दो जानूँ हो बैठ गयी।
उठानेकी कोशिश की पर वह न उठी। कहने
वीर, मैं यहाँसे तब तक न उठूँगी, जब
प्रार्थना स्वीकार न करेंगे। मेरी प्रार्थना स्वीकार

इन्हें सताया है। तुम्हारे स्वामीका नाम सुनकर सहायता माँगने बहुत दूरसे आयी हैं।"

सनक़ू—"जिन खोजा तिन पाइयाँ" बडा अच्छा हो अगर वह उस दैत्यको मार सकें। मिल जाय तो वह विना मारे न छोडें। मालिकको इनसे ब्याह करनेके लिये राजी करदें, तो बड़ा अच्छा हो। इनका नाम क्या है ?

पादड़ी—इनका नाम मिकोमिकोना है, क्योंकि इनके राज्यका नाम मिकोमिकन है। और ऐसा होना ही चाहिये।

सनक़ू सुनकर सतुष्ट हो गया। पादड़ी भी उसकी सरलता से प्रसन्न हुआ। उसने मनमें कहा कि किज्योतिकी तरह इसका दमाग भी असभव बातोंसे भर गया है। इसलिये समझता है कि किज्योति कभी न कभी अवश्य सम्राट् हो जायगा।

पंद्रहवाँ परिच्छेद

वह लोग काले पहाडपर पहुँचे तो क्या देखते हैं कि किंज्योति चट्टानों के बीच बैठा है। कपड़े पहने है, पर पूरे हथियार नहीं बाँधे है। सनकूने दूरसे ही दुरतियाको बता दिया, यही मेरे स्वामी हैं, तो उसने घोडेको एड लगायी। उसके साथ नकली दाढी लगाये हज्जामराम भी थे। किंज्योतिके पास वह लोग पहुँचे, तो हज्जामने दुरतियाको घोड़ेसे उतारा। वह उतरते ही दौड़कर किंज्योतिके पैरोंके पास दो जानू हो बैठ गयी। किंज्योतिने उसे उठानेकी कोशिश की पर वह न उठी। कहने लगी—"साहसी वीर, मैं यहाँसे तब तक न उठूँगी, जब तक आप मेरी प्रार्थना स्वीकार न करेंगे। मेरी प्रार्थना स्वीकार करनेसे आपका बड़ा गौरव बढ़ेगा और एक दुखिया कुमारी कन्याकी रक्षा होगी। यदि आपकी भुजाओंमें उतना ही बल हो जितना आपका नाम है, तो आप मेरी सहायता किये बिना न रहेंगे। मैं आपकी कीर्ति सुन, दूर देशसे यहाँ तक पहुँची हूँ।"

किंज्योति—जब तक तुम न उठोगी तब तक मैं कुछ जवाब न दूँगा और न तुम्हारी बात ही सुनूँगा।

इन्हे सताया है। तुम्हारे स्वामीका नाम सुनकर सहायता माँगने, बहुत दूरसे आयी हैं।"

सनकू—"जिन खोजा तिन पाइयाँ" बड़ा अच्छा हो अगर वह उस दैत्यको मार सकें। मिल जाय तो वह बिना मारे न छोड़ें। मालिकको इनसे व्याह करनेके लिये राजी करदें, तो बड़ा अच्छा हो। इनका नाम क्या है?

पादड़ी—इनका नाम मिकोमिकोना है, क्योंकि इनके राज्यका नाम मिकोमिकन है। और ऐसा होना ही चाहिये।

सनकू सुनकर सतुष्ट हो गया। पादड़ी भी उसकी सरलता से प्रसन्न हुआ। उसने मनमे कहा कि किज्योतिकी तरह इसका दमाग भी असभव बातोंसे भर गया है। इसलिये समझता है कि किज्योति कभी न।कभी अवश्य सम्राट् हो जायगा।

पंद्रहवाँ परिच्छेद

वह लोग काले पहाड़पर पहुँचे तो क्या देखते हैं कि किंज्योति चट्टानों के बीच बैठा है। कपड़े पहने है, पर पूरे हथियार नहीं बाँधे है। सनकूने दूरसे ही दुरतियाको बता दिया, यही मेरे स्वामी हैं, तो उसने घोड़ेको एड़ लगायी। उसके साथ नकली दाढ़ी लगाये हज्जामराम भी थे। किंज्योतिके पास वह लोग पहुँचे, तो हज्जामने दुरतियाको घोड़ेसे उतारा। वह उतरते ही दौड़कर किंज्योतिके पैरोंके पास दो जानूँ हो बैठ गयी। किंज्योतिने उसे उठानेकी कोशिश की पर वह न उठी। कहने लगी—"साहसी वीर, मैं यहाँसे तब तक न उठूँगी, जब तक आप मेरी प्रार्थना स्वीकार न करेंगे। मेरी प्रार्थना स्वीकार करनेसे आपका बड़ा गौरव बढ़ेगा और एक दुखिया कुमारी कन्याकी रक्षा होगी। यदि आपकी भुजाओंमे उतना ही बल हो जितना आपका नाम है, तो आप मेरी सहायता किये विना न रहेंगे। मैं आपकी कीर्ति सुन, दूर देशसे यहाँ तक पहुँची हूँ।"

किंज्योति—जब तक तुम न उठोगी तब तक मैं कुछ जवाब न दूँगा और न तुम्हारी बात ही सुनूँगा।

दुरतिया—और जब तक मेरी प्रार्थना स्वीकार न होगी तब तक मैं भी न उठूँगी।

किंज्योति—अच्छा मैं स्वीकार करता हूँ। पर शर्त यह है कि वह मेरे राजाके विरुद्ध, मेरे देशके विरुद्ध और जो महिला मेरे दिलकी चाबी रखती है, उसके भी विरुद्ध न हो।

दुरतिया—इनमें किसीके भी विरुद्ध नहीं है।

इधर सनकूने धीरेसे किंज्योतिके कानमें कहा—"प्रार्थना आप मजेमें स्वीकार कर सकते हैं। क्योंकि यह तुच्छ बात है। केवल एक दुष्ट दैत्यको मारना है। यह इथोपियाके मिनकोमिकन राज्यकी रानी मिकोमिकोना है।"

किंज्योति यह सुन बोला—"चाहे जो हो, मेरी आत्मा जो कहेगी वही मैं करूँगा, और जो शौर्यशास्त्रके नियमोंके अनुकूल होगा वही करूँगा।" दुरतियाकी ओर फिरकर उसने कहा—"सुंदरि, उठो। जो कुछ तुम माँगती हो मैं दूँगा।"

दुरतिया—मेरा निवेदन तो यही है कि जहाँ मैं ले चलूँ वहाँ आप चलें, और जिस कृतघ्न ने मेरा राज्य हड़प लिया है, उसे जब तक ठीक न कर लें तब तक किसी दूसरे काममें हाथ न डालें।

किंज्योति—मै फिर कहता हूँ कि तुम्हारी बात छोड़ो। सुंदरि, तुम बहुत जल्द अपनी

मैं जीजानसे तुम्हारी मदद करूँगा। [illegible]
उठो जल्द चलो।

क्रिस्टोविने बड़े [illegible]
तैयार करने और हथियार लानेको कहा।

इसके बाद चारों आदमी पहाड़से नीचे उतरे। रास्तेमें पादड़ीसे भेंट हो गई। उसे देख क्रिस्टोवि आश्चर्यचकित हो गया। पादड़ीने साथ चलनेकी अनुमति बड़ी नम्रतासे माँगी। उसने अनुमति दे कहा कि मुझे विश्वास है कि श्रीमतीका सहेला (यानी हज्जाम) इन्हें अपने पीछे [illegible] सानंद बिठा लेगा। हज्जाम तुरंत उतर पड़ा और पादड़ीको अपने आगे बैठनेको बुलाया। दुर्भाग्यवश खच्चर जरा गर्मी था। वह लगा दुलत्तियाँ झाड़ने। अगर यह हज्जामकी खोपड़ी या सीनेमें लगतीं तो वह वहीं ढेर हो जाता, पर ऐसा नहीं हुआ। तो भी वह ऐसा डरा कि खच्चरकी पीठसे धड़ाम जमीनपर लुढ़क पड़ा। उस समय उसे अपनी नकली दाढ़ीकी याद न रही। वह भी गिर पड़ी। उसने दाढ़ी जमीनमें पड़ी देखी, तो याद आयी। हाथोंसे मुँह मूँद वह यह कहने लगा—"हाय जबड़े की हड्डी टूट गयी।" क्रिस्टोवि दाढ़ी जमीन पर देख बोला—"ओहो इतनी सफाई से तो हज्जाम भी न मूड़ता।" पादड़ी ने देखा कि भेद खुला — तो तुरंत

दौडकर उसका सिर सीनेसे लगा लिया। फिर कुछ गुन गुनाने लगा, मानो मत्र पढता हो और खटसे दाढी फिर हज्जामके मुँहपर लगा दी। यह देख किंज्योतिके आश्चर्यका ठिकाना न रहा।

कुछ दूर जानेके बाद किंज्योतिने पादडीसे पूछा—"आप इधर जगल में अकेले कैसे आ पहुँचे ?" पादडीने कहा—"मैं सेविलसे आ रहा था। रास्ते मे डाकुओंने सब रुपये पैसे छीन लिये। मैं सहायता माँगने आपके पास चला आया।"

किंज्योति ने फिर दुरतियासे कहा—"अब आपभी अपनी कहानी सुनाइये।"

दुरतिया—मैं बडी खुशी से सुनाऊँगी पर, आप मेरी दु ख भरी बाते सुन कही ऊब न जायँ।

किंज्योति—कभी नही प्यारी महिला।

दुरतिया—अगर ऐसी बात है, तो सुनिये।

पादड़ी और हज्जाम दुरतिया के दाये बाये यह देखनेको खडे हो गये कि वह क्या कहती है। सनकू भी पास जा खडा हुआ किंज्योतिकी तरह वह भी धोखे में ही था। दुरतिया जीनपर आसन जमा एक दो बार खाँसकर यों कहने लगी—"सज्जनो, पहले आप यह जान लें कि मेरा नाम" इतना कह वह रुक गयी क्योंकि पादडीने जो नाम बताया था, सो वह भूल गयी।

ादडीने तुरत साथ लिया और कहा—"यह कुछ आश्चर्यकी बात नहीं कि जो श्रीमती अपनी विपत्तियोंको वर्णन करने में यो घबरा जायँ। विपत्ति ही ऐसी है कि आपकी स्मरण-शक्ति भी लोप होगयी। यहाँ तक कि आप अपना नाम भी भूल गयी। आप मिकोमिकोनाकी राजकुमारी और मिकोमिकोना राज्य की उत्तराधिकारिणी हैं।" दुरतिया फिर कहने लगी—"हाँ ठीक, कहते हो अब तुम्हारे सहारे की जरूरत नहीं। मैं आपही अपनी राम कहानी कह सुनाऊँगी। अच्छा सुनिये। मेरे माता-पिता मुझे अनाथकर चल बसे, तो एक दुष्ट दैत्य मेरे राज्य पर चढ आया। मैं अबला कुछ न कर सकी। कोई उपाय न सूझा, तो बहादुर किंज्योतिकी तलाश में समुद्र पार कर चली आयी। मैंने उनका नाम वहीं ईथ्योपिया में सुना था। जितने आदमी मेरे साथ आये थे, उनमें बस यही दढियल (हज्जामकी ओर इशारा कर) बच रहा है। बाकी सब तूफान आ जानेसे, समुद्रमें ही डूब मरे। हम दोनों एक तख़्तेके सहारे किसी तरह किनारे पहुँचे। बस यही मेरी राम कहानी है।"

किंज्योति पर इसका बडा प्रभाव पडा। उसने झट प्रतिज्ञा कर ली कि मैं, अवश्य उस दुष्ट दैत्यका सिर काटूँगा।

इसी प्रकार बातें करते सब जा रहे थे। निकोलस हज्जाम ने

पानीका झरना देख कहा—"यहीं ठहर जाइये और चरद-खुरद कर लीजिये।" इस पर सब ठहर गये। पादड़ो सराय-से जो थोड़ा सामान लाया था, उससे ही सब पेटकी आग ठढी करने लगे। इतनेमें एक छोकरा उधरसे आ निकला। उसने सबको ध्यानसे देखा, फिर किज्योतिकी ओर दौड़ा। उसके पैर पकड़ और रोकर बोला,—"हुजूर क्या मुझे भूल गये? मैं वही एड्रीज हूँ जिसे हुजूरने बलूतके पेडसे खोला था।

किज्योतिने पहचान लिया। सबकी तरफ रुखकर कहा—"दुष्टोंकी दुष्टता रोकनेके लिये बहादुर सवारोंकी कितनी जरूरत है, इसका सबूत यह छोकरा है। बहुत दिन हुए, मैं एक जगल-से जा रहा था। किसी दुखियाकी दुख भरी आवाज कानों में पहुँची। जिधरसे आवाज आती थी, उधर ही चला गया, तो क्या देखता हूँ कि यह छोकरा नगा बलूतके पेडसे बँधा है, और इस पर कोडे पड रहे हैं। मारनेवाला इसका मालिक एक किसान था। मैंने इसे बचाया, और इसका जो कुछ पावना था दे देनेका वचन उससे ले लिया। एड्रीज, क्या यह सच नहीं है? उस किसानने भी कैसी दीनतासे मेरा हुक्म मान लिया था। डर मत। इन भलेमानसो से सब बातें कह दे।"

एड्रीज—हुजूरने जो कुछ कहा सब ठीक है लेकिन जैसा आपने सोचा, वैसा न हो, ठीक उसका उलटा हुआ।

किंज्योति—उलटा कैसे हुआ ? क्या उसने तेरी तनख्वाह नहीं दी ?

एण्ड्रीज—नहीं, बिलकुल नहीं। इसके सिवा हुजूरके चले जाने पर उसने फिर मुझे पेडसे बाँध, पहले से ज्यादा कोडे लगाये। हर कोडेके साथ हुजूरकी ऐसी दिल्लगी उडाता था कि अगर उस समय मारसे मैं व्याकुल न होता, तो हँसे बिना न रहता। ख़ैर तबसे अब तक मैं सफाखानेमें ही था। यह सारा दोष आपका ही है। अगर हुजूर अपनी राह चले जाते, और दूसरोंके कामों मे दखल न देते, तो मेरा मालिक दस-बीस कोडे मारकर ही सतुष्ट हो जाता, लेकिन आपकी छेडछाडसे उसने आग बगूला हो, आपका बदला मुझसे ले लिया। अब मैं जन्म भरके लिये निकम्मा हो गया।

किंज्योति—मैं वहाँसे चला आया, इसीसे यह ख़राबी हुई। लबे तजर्बेसे मालूम हुआ कि किसान हानि सहकर कभी अपना, वचन पूरा नही करते हैं। अगर उसने तेरा पावना न चुकाया हो, तो क़सम खाता हूँ, मैं उसे खोजकर सजा दूँगा।

यह कह वह उछल पडा और वायुवेग पर जा चढा। यह देख दुरतिया बोल उठी—"याद कीजिये। आप पहले मेरा काम करनेका वचन दे चुके हैं।"

किञ्योति—आपने अच्छी याद दिलायी। अब जब तक मैं आपका काम पूरा न करलूँ तब तक एड्रीज को ठहराना होगा। मैं फिर कसम खाकर कहता हूँ कि किसानको दड दिये विना विश्राम न करूँगा।

एड्रीज—मैं ऐसी क़समों के भरोसे नहीं ठहर सकता। आप मुझे खर्च दे, सेविल पहुँचा दीजिये, बस यही बडी भारी सजा है। आपके पास कुछ हो, तो खानेको दीजिये और कुछ साथ ले जाने को भी। लाइये, भगवान् आपका और बहादुर सवारोंका भला करे।

सनकूने एक टुकडा रोटी और पनीर देकर कहा—"लो एड्रीज भाई! तुम्हारे लिये मैं भी दुख सहता हूँ।" एड्रीज बोला—"इसमें तुमने क्या दुख सहा?" सनकूने जवाब दिया—"रोटीका यह टुकडा तुम्हे, मैं दे रहा हूँ, पर थोडी देर में इसकी सख्त जरूरत मुझे होगी। मैं बहादुर सवारका मुसाहब हूँ, मुझे भूख-प्यास और न मालूम कितने तरह के कष्ट सहने पडते हैं। कहाँ तक कहूँ, यह खुद ही सोच लो।"

एंड्रीजने रोटी पनीर ले लिया। और किसीको कुछ देते न देख, सलामकर चल दिया। जाते-जाते किञ्योतिसे कह गया—"हुजूर अब कभी पिटते क्या कटते भी देखें, तो मुझे न छुडावे। बस भाग्यके भरोसे छोड दें।

लड़ाई आज तक मैंने नहीं देखी। उन्होंने मूली-गाजर की तरह उसका सिर एक ही हाथ में उड़ा दिया।"

इसी समय ऊपर भी शोरगुल होता सुनाई दिया। किज्योति गर्ज-गर्जकर किसीसे मानो कह रहा था—"ठहर जा नामर्द, चोर, लुटेरा ठहर जा!" दीवार पर तलवार पड़नेकी खटाखट भी सुनाई दी।

मनकू चिल्लाया—"खड़े-खड़े सुनते हो और जाते नहीं! अब जाहीकर क्यां करोगे? दैत्य क्या अब तक जीता होगा? मैंने अपनी आँखों देखा कि गचपर खूनकी नदी बह रही है और उसका कुप्पे का-सा सिर अलग पड़ा है।"

यह सुन भठियारा बोल उठा—"मैं फाँसी पड़ूँ जो किज्योतिने शराबके कुप्पे न तोड़ डाले हों। उसके पलँगके पास ही तो वह रखे थे। उनसे जो शराब बही है, उसे ही यह हजरत खून समझ रहे हैं।"

इतना कह वह ऊपर दौड़ गया। उसके पीछे और लोग भी दौड़े। सबने जाकर किज्योतिको विचित्र अवस्था में देखा। देह में सिर्फ कमीज और सिरपर रातकी टोपी थी। बायें हाथमें कम्मल लिपटा और दायेंमें तलवार थी। आँखें बंद, पर

सोलहवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन वह लोग फिर उसी सरायमें जा पहुँचे, जिसमें जानेसे सनकू राव हिचकता था। भठियारा, भठियारी, उसकी बेटी, दाई सबके सब किंज्योति और सनकूको देख स्वागतके लिये सानद बाहर निकल आये। किंज्योति भी इससे प्रसन्न मालूम होता था। वह बडी गभीरतासे सबसे मिला और बोला—"अबके पहलेसे अच्छा बिस्तर देना।" भठियारी बोली—"पहलेसे अच्छा दाम मिलेगा, तो वह भी अच्छा हो जायगा।" किंज्योति बोला—"अच्छा दाम दूँगा।" इसपर भठियारा ने उसी पहलेवाले कमरे मे बिस्तर लगाया, पर यह पहलेसे कुछ अच्छा था। किंज्योति उसपर जाकर लेटा और लेटते ही सो गया। क्योंकि उसका शरीर और दमाग दोनों थके हुए थे।

किंज्योति जिस समय बेखबर सो रहा था, उस समय उसके साथी नीचेके कमरे में, पेट-पूजा कर रहे थे। पेट-पूजा हो जाने पर किंज्योतिकी चर्चा चली ही थी कि सनकू दौडता-हाँपता आया और बोला—"दौडो, दौडो मालिक की मदद करो! वह राजकुमारी के बैरी से भिड रहे हैं। ऐसी भयंकर

लड़ाई आज तक मैंने नहीं देखी ! उन्होंने मूली-गाजर की तरह उसका सिर एक ही हाथ मे उड़ा दिया।"

इसी समय ऊपर भी शोरगुल होता सुनाई दिया। किज्योति गर्ज-गर्जकर किसीसे मानो कह रहा था—"ठहर जा नामर्द, चोर, लुटेरा ठहर जा !" दीवार पर तलवार पड़नेकी खटाखट भी सुनाई दी।

सनकू चिल्लाया—"खड़े-खड़े सुनते हो और जाते नहीं ! अब जाहीकर क्या करोगे ? दैत्य क्या अब तक जीता होगा ? मैंने अपनी आँखों देखा कि गचपर खूनकी नदी बह रही है और उसका कुप्पे का-सा सिर अलग पड़ा है।"

यह सुन भठियारा बोल उठा—"मैं फाँसी पड़ूँ जो किज्योतिने शराबके कुप्पे न तोड़डाले हो। उसके पलँगके पास ही तो वह रखे थे। उनसे जो शराब बही है, उसे ही यह हजरत खून समझ रहे हैं।"

इतना कह वह ऊपर दौड़ गया। उसके पीछे और लोग भी दौड़े। सबने जाकर किज्योतिको विचित्र अवस्था में देखा। देह में सिर्फ कमीज और सिरपर रातकी टोपी थी। बायें हाथमें कम्मल लिपटा और दायेंमें तलवार थी। आँखें बद, पर मुँह खुला था। वह इस ढगसे खड़ा हो बोल रहा था मानों दैत्यसे सचमुच लड़ता हो। उसने दैत्यको मार डालनेके

ध्यानसे शराबके कुप्पेपर इतने वार किये, कि कुप्पेकी धज्जियाँ उड गयीं, और तमाम शराब-ही-शराब नजर आती थी।

भठियारेने यह देखा तो आग बगूला हो गया। किज्योतिको पकड़ घूँसेपर घूँसे मारने लगा। नाई और पादडी न बचाते, तो किज्योतिका काम ही तमाम हो जाता। इतनी मरम्मत हो जाने पर भी, वह होशमें न आया। एक बालटी पानी उसके सिरपर डाला गया, तब कुछ होश हुआ।

इधर सनकू दैत्यका मूँड खोजनेमें ही हैरान था। बहुत ढूँढनेपर भी न मिला, तो निराश हो बोल उठा—"अफ़सोस, सिरके साथ मेरा राज्य भी गायब हो गया।" बात यह थी कि किज्योतिकी बातों और वादोंका ऐसा असर पड़ा कि वह जागता हुआ भी सोते हुए किज्योतिसे ज्यादा पागल हो गया था। भठियारा सनकूकी सनक और किज्योतिके हस्त-कौशलसे मन-ही-मन बिगड रहा था। उसने निश्चय कर लिया कि अबके पूरा दाम वसूल किये बिना न छोड़ूँगा।

पादडीने किज्योतिका हाथ पकडा, तो उसने राजकुमारी दुरतिया समझकर कहा—"मैंने दैत्यको मार डाला। आप बेखटके राज्य करें।"

यह सुन सनकूसे न रहा गया। वह बोल उठा—"क्या मैंने

नहीं कहा था कि मालिकने दैत्यको मार डाला ? अब मेरे राव-राजा बननेमें कोई विघ्न नहीं है।"

भठियारेको छोड, सबके सब खिलखिला उठे। सबने किंज्योतिको उठा, सहज ही पलँगपर लिटा दिया। वह भी खुर्राटे लेने लगा। सब लोग फिर बडे कमरेमें आ गये। वहाँ भठियारी तो यह बड़बडा रही थी कि इस निपूते बहादुरके मारे हमारा सफाया हो गया। और सनकू दैत्यका सिर न मिलनेके कारण मन मारे बैठा था। पादडीने तो भठियारीको यह कह शांत किया कि तेरा जो कुछ नुकसान हुआ है, मैं दूँगा और दुरतियाने सनकूको अपने यहाँ रावराजा बनानेका वचन दे संतुष्ट किया। पर वह बिचारा बहुत देर संतुष्ट न रह सका। क्योंकि जब वह लोग आपसमें बात-चीत कर रहे थे, तब एक अजनबी आदमी सरायमें आ पहुँचा। दुर्भाग्यवश वह दुरतियाका पति निकला। वह घर छोड कहीं चला गया था। आज अकस्मात् बहुत दिनोंके बाद दुरतियाको पतिके दर्शन मिल गये। उसके आनंदका क्या पूछना था। उसके आनंदसे सभी आनंदित थे। ऐसे आनंदके समय केवल सनकूही उदास और दुखी था। क्योंकि उसका बना बनाया खेल बिगड गया। उसने बड़े दुःखके साथ सुना कि दुरतिया है, मिकोमिकोनाकी

राजकुमारी नहीं, साधारण स्त्री और आगतुक नवयुवककी पत्नी है। उसने सोचा कि अब न किज्योतिको साम्राज्य मिल सकता है और न मुझे राज्य ही। वह ऐसा दु खी हुआ कि चुपचाप उठकर अपने मालिकके पास चला गया। उसने जाकर किंज्योतिके कानमें कहा—"हुजूर, सब गुड मिट्टी हो गया। अब मजेमें सोइये। राजकुमारीके लिये तकलीफ उठानेकी या दैत्यसे लडनेकी जरूरत नही रही।"

किंज्योति—क्या बकता है ? दैत्यको तो मैं मार चुका। एक ही हाथमें उसका सिर उडा दिया। लहूकी धार पानीकी तरह बहती थी।

सनकू—पानी नहीं लाल शराबकी तरह कहिये। हुजूरने जिसे मारा वह शराबका कुप्पा था, और लहू अठारह गैलन शराब था।

किंज्योति—बेवकूफोकी तरह क्या बक रहा है ! तू बेहोश है या होशमे ?

सनकू—उठिये तो मालूम हो कौन बेहोश है ? अभी क्या जब दारूका दाम देना पडेगा, तब मालूम होगा। लेकिन अभी तो आपकी राजकुमारी साधारण महिला दुरतिया बन गयी हैं।

किंज्योति—इसमें आश्चर्यकी कौन-सी बात है ? क्या तू भूल गया, कि पिछली बार जब हम यहाँ आये थे, तब सब

चीज़ोंपर जादू हो गया था। इस बार भी हो गया हो, तो क्या ताज्जुब है!

सनकू—ताज्जुब कुछ नहीं। अगर मेरा कम्मलमें उछाला जाना भी जादूका खेल हो, तो यह भी हो सकता है। लेकिन ऐसा नहीं है। मैंने उस बारभी भठियारेको देखा था। कम्मलका एक कोना, उसके भी हाथमें था, यह मुझे खूब याद है। आज भी वह यही है। मैं जानता हूँ भठियारे बड़े पाजी होते हैं। यह जादू नहीं उसकी शैतानी थी।

किंज्योति—अच्छा! मेरे कपड़े ला। मैं स्वयं चलकर इस उलटफेरको देखूँगा।

सनकूने कपड़े लाकर दिये। ऊपर वह कपड़े पहनता था और नीचे पादड़ी दुरतियाके पतिसे कह रहा था—"किंज्योति सनक गया है। मैं उसे घर ले जानेके लिये, कोई नया उपाय सोच रहा हूँ। दुरतिया आपके साथ नहीं जा सकती, उससे अभी बहुत काम लेना है।" फरनदूने कहा—"अगर ऐस बात है, तो मैं उसे न ले जाऊँगा।" फरनदू दुरतियाके स्वामीका नाम था।

इतनेमें किंज्योति हर्वे हथियारोंसे लैस हो, सिरपर चिल-मिचीका टोप रखे आ पहुँचा। आते ही उसने दुरतिया-से कहा—"मुसाहबसे सुना है कि आपकी शान-शौकत

चली गयी, और आप राजकुमारीसे एक साधारण स्त्री होगयी। अगर आपके बापने यह समझकर, आपपर जादू किया हो कि मैं सहायता करना छोड़ दूँ, तो मैं कहता हूँ कि वह इस बारेमें कुछ नहीं जानता है। बहादुर लोग इससे बडी-बडी कठिनाइयाँ दूर कर सकते हैं।" दुरतिया बोली—"मैंतो जैसी थी वैसीही हूँ। कुछ भी नही बदली। कलही यहाँसे कूच करूँगी।"

इस पर किज्योति सनकूकी तरफ फिरा, और क्रोधकर बोला—"तू स्पेन-भरमें सबसे बडा पाजी शैतान है। क्या तूने नहीं कहा कि राजकुमारी दुरतिया बन गयी, और दैत्यका मूँड कुप्पा बन गया? मनमें तो आती है कि तेरी खोपडीमें अक्ल ठूँस दूँ।"

सनकू—क्षमा कीजिये। राजकुमारीके बारेमें मेरी भूल हो सकती है, लेकिन दैत्यके सिरके बारेमें नहीं। भठियारा जब बिल पेश करेगा, तब आपही मालूम हो जायगा कि मेरा कहना ठीक है या नही, और मैं तो इस बात से खुश हूँ कि यह अब तक राजकुमारी बनी हुई है। इनके राजकुमारी बने रहनेसे ही अपना फायदा है।

इतना सुन किज्योति शांत हो गया। आमोद-प्रमोदके पश्चात् सब सोने चले गये। किज्योतिने क़िलेकी रक्षाका भार

और भी न जाने क्या-क्या वह बकने लगा। इसी समय भठियारेकी बेटी भी आहिस्तेसे बोल उठी—"जनाब जरा इधर भी तशरीफ़ लाइये।" यह सुन किंज्योतिने सिर घुमाया, तो चाँदनी में उसे साफ़ दिखाई दिया कि कोई दीवारके सूराख़से बुला रहा है। वह सरायको किला समझ रहा था, इसलिये उस सूराख़को भी किलेका जालीदार झरोखा समझ लेना कौन बड़ी बात थी। उसने समझा कि किलेदारकी बेटी मुझपर आशिक हो बात-चीत करने आयी है। बस उसने वायुवेगका मुँह फेरा और सूराख़के पास जा पहुँचा। छोकरियोंको देख वह बोला—"सुन्दरियो, तुमने मुझसे प्रेम कर लिया पर मैं इसका बदला नहीं दे सकता, क्योंकि राजकुमारी दर्शनीयाका प्रेम मुझे दूसरे से प्रेम करनेमें रोकता है। प्रेमके सिवा जो माँगो मैं देनेको तैयार हूँ।"

दाई बोली—"और कुछ नहीं सिर्फ आपका हाथ चाहती हूँ।"

इतना कह वह नीचे चली गयी, और मनकूके गधेकी बाग-डोर उठा लायी। किंज्योति महिलाओंको असन्तुष्ट करना अनुचित जान, सूराख़ तक पहुँचनेके लिये खड़ा हो गया और हाथ बढ़ाकर बोला—"सुन्दरी, यह हाथ लो और देखो कि इसमें कितनी ताक़त है।"

सत्रहवाँ परिच्छेद

सरायके सब लोगतो सो गये परन्तु भठियारेकी बेटी और दाईको नींद न आयी। किज्योतिको घोडेपर सवार फाटककी रक्षा करते देख उन्हें दिल्लगीकी सूझी। उन्होंने सोचा, और कुछ नही तो उसकी बेसिर पैरकी लच्छेदार बातें ही सुननेमें आवेंगी।

सरायमे सडककी ओर खिडकी न थी। सिर्फ एक सूराख था, जिससे सूखी घास और लीद फेंकी जाती थी। इन दोनोंने सूराखसे देखा कि किज्योति घोडे पर चढा, भालेके सहारे आगे झुका कलेजेको टुकडे-टुकडे करनेवाली आहें भरता धीरे-धीरे बड-बडा रहा है—"परम सुदरी, चतुराईकी खान, हास-परिहासका भडार, लज्जाशीला, टोबोसोकी राजकुमारी इस समय क्या करती होगी? शायद अपने प्यारे बहादुर किज्योतिकी याद करती होगी, जो उसके लिये अनेक प्रकारकी विपदाओंमें फँसा है, ऐ चद्र! तू उसकी खबर ले आ। तू क्या लावेगा? तू तो उससे कुढता है, वह अपने महल के झरोखेसे झाँकती है। तो तू देखकर जल जाता है।" इसी तरह

"अच्छा देखती हूँ।" कह दाईने बागडोरका फदा उसकी कलाईमे डाल, उसका दूसरा छोर ऊपरके किवाडकी जजीरसे बाँध दिया। किज्योति कलाईमें रस्सी बँधी जान बोला—"सुदरिया ! हाथ देखनेके बदले दु.ख दे रही हो। ऐसी बेरहमी मत करो। हाथको क्यों दु ख देती हो ? उसका क्या क़ुसूर है ?"

पर किसीने एक शब्दभी न सुना। क्योंकि वह दोनों तो अपना काम कर पहलेही चलदी थीं।

किज्योति वायुवेग पर सीधा खडा था और उसकी कलाई सूराखमे बँधी थी। वायुवेग जराभी इधर-उधर हुआ, तो मैं लटकता ही रह जाऊँगा, यही चिंता अब उसे सताने लगी। उसने सोचा कि यह भी जादूका ही खेल है। वह अपनी मूर्खता पर अफसोस करता था कि नाहक ही यहाँ फिर आया।

उसने हाथ छुडानेकी बडी-बडी कोशिशें कीं पर कुछ फायदा न हुआ। लाचार घोडे पर बैठ गया, पर बैठा न रह सका। उसने सोचा कि यहाँ जादूमे जन्म-भर जकडे रहनेसे ससारकी बडी हानि होगी। उसने सनकूको बहुत पुकारा, पर वह तो मजेमें खुर्राटे ले रहा था। जवाब कौन देता। आखिर सवेरा हुआ उसने सोचा जादूका यह असर तो बराबर रहेगा और दिनको भी छुटकारा न होगा। वायुवेगभी टससे मस न हुआ,

तो उसे इसका पूरा विश्वास हो गया। उसने सोचा कि मैं और वायुवेग दोनों ही दाना पानी विना यों ही तडपते रह जायँगे। जब तक कोई होशियार जादूगर आकर न छुडावेगा, तब तक जादूका असर न जायगा। यह सब सोच वह वेतरह चिल्लाने लगा।

सवेरा होते ही कुछ मुसाफिर घोडोंपर सरायमें टिकनेके लिये आये, पर फाटक बंद था। उन्होंने जोरसे फाटक खट-खटाया, तो किज्योतिकी नजर उनपर जा पडी। वह डपटकर बोला—"बहादुर हो चाहे मुसाहब, तुम्हे यों इस किलेका फाटक खटखटानेकी जरूरत नहीं। इस वक्त किलेवाले सो रहे हैं। जब तक सूरज न उग जाय तब तक फाटक खोलनेका यहाँ दस्तूर नहीं है। अभी चले जाओ। जब दिन चढेगा, तब फाटक खुलने या न खुलनेका विचार होगा।" उनमें से एक बोला—"कैसा किला और कैसा दस्तूर ! अगर तुम भठियारे हो, तो किसीसे फाटक खुलवा दो। हम लोग मुसाफिर हैं और जल्दीमें हैं। घोडोंको सिर्फ दाना खिलाकर चल देंगे।"

किज्योति—मैं क्या भठियारा मालूम होता हूँ ?

मुसाफिर—मैं नहीं जानता तुम क्या मालूम होते हो। पर पागल जरूर हो, जो सरायको किला कहते हो।

किंज्योति—यह किला है और अच्छा किला है। इसके रहने-वालोंके सिरोंपर ताज और हाथोंमें शाही आमे हैं।

मुसाफिर—नही, हाथोंमें ताज और सिरोंपर आमे कहो।

इस बातचीतसे और मुसाफिर ऊब से गये थे। उन्होंने फाटकपर और भी जोरसे धक्का मारा। इससे भठियारा तथा दूसरे लोग भी जाग उठे।

इधर मुसाफिरोंका एक घोडा सूँघता हुआ वायुवेगके निकट जा पहुँचा। वह विचारा कान झुकाये, पीठपर अपने मालिकको लादे उदास खडा था। यद्यपि वह काठका सा मालूम होता था तथापि था हड्डी मासका ही। वह भी उसे सूँघने चला। ज्यो ही वह एक कदम आगे वढा त्यों ही किंज्योति जमीनपर आ जाता पर हाथ बँधा रहनेके कारण बीचमे ही झूलता रह गया। उसे ऐसा मालूम होने लगा मानो कलाई कटी या धडसे बाँह अलग हो रही है। वह जमीनके इतने पास था कि पैरोंके अँगूठोसे उसे छूनेके लिये छटपटाने लगा। इससे उसकी तकलीफ और भी वढ गयी।

खुलासा यह कि वह इतने जोरसे चीखा कि ...
घबराकर फाटक खोल दिया। मरायके और लो...
उठे। इस चीखसे दार्डकी भी नीद खुल गयी।
चुपकेसे रस्सी खोल दी। बस किंज्योति

भठियारेके आगे धडामसे गिर पडा। सब लोग उसके पास दौड गये और बात क्या है, पूछने लगे। किज्योति कोई जवाब न दे कलाईसे फंदा निकाल वायुवेगपर चढ, ढाल लगा, भाला तान मैदानमें पैंतरे बदलता हुआ बोला—"मुझपर जादू नही हुआ, ऐसा जो कहे वह झूठा है। मिकोमिकोनाकी राजकुमारी हुक्म दें, तो द्वन्द्व युद्धके लिये मैं उसे ललकार सकता हूँ।"

नये मुसाफिर किज्योतिकी वार्तोसे चकित हो गये लेकिन भठियारेने उन्हे सारा भेद बता दिया, तो वह निडर हो सरायमे दाखिल हुए। ललकारका कोई जवाब न पा वह गुस्सेसे और भी पागल हो उठा था लेकिन शौर्यशास्त्रके नियमानुसार राजकुमारी-का काम किये बिना किसी नयी मुहीमपर जाना बेमुनासिब समझ चुप हो रहा, कुछ न बोला।

अठारहवाँ परिच्छेद

सब लोगोंने वह दिन सरायमें बडे आनंदसे विताया। किज्योति पिछली रातकी थकावटके कारण जब बेखबर सो रहा था, तब उसके साथी लोग उसका पागलपन छुडाने के लिये उसे घर ले जानेका उपाय सोच रहे थे। सब बातें तै हो गयी तो उन्होंने एक गाडीवानको ठीक कर लिया, जो सयोगवश एक जोडा बैल लिये उधरही आ निकला था। बाँसका एक पिजरा बनाया गया। वह इतना बडा था कि किज्योति मजेमें उसमे रह सकता। पादडीके कहने पर फरनदू हज्जाम, भठियारे और कुछ मुसाफिरोंने अपने अपने मुँह पर नकाबे डाल ली जिसमे वह किसी को न पहचान सके।

सब ठीक हो जाने पर वह लोग चुपचाप दबे पाँव किज्योतिके कमरेमें घुस गये। वह बेसुध पडा था। उन लोगोने उसके हाथ पैर खूब कसकर बाँध दिये। वह जागनेपर इधर उधर देखने लगा। उठना चाहा पर न उठ सका। अपने चारों ओर विचित्र मनुष्योको देख आश्चर्य करने लगा। कुछ समझमें न आया, तो अभ्यासानुसार उन्हे जादूके किलेके भूत समझ

लिया। अपने ऊपर भी जादूका ही असर समझा। पादड़ीने जैसा सोचा था ठीक वैसा ही हुआ। अकेला सनकू ही अपनी असली सूरत और होशहवासमें था। वह भूतोंको जान गया तो भी उस समय बोलनेकी हिम्मत न हुई। पीछे सारा भेद उसे आपही मालूम हो गया।

पिंजरा ऊपर आया, तो किज्योति उठाकर उसमें रखा गया। फिर कील मार दी गयी जिसमें वह न खुल सके। सब लोग कंधों पर पिंजरा उठा बाहर ले आये। हज्जाम आवाज बदलकर बोला—"लामनचाके बहादुर! घबराना नहीं। ठिकाने पर जल्द पहुँचानेके लिये ही यह उपाय किया गया है। आपकी शादी राजकुमारी दर्शनीयासे होगी और सनकूको भी खूब दौलत मिलेगी।"

किज्योति यह सुन बड़ा खुश हुआ और बोला—"अगर ऐसा हुआ, तो मैं इस कैदको अपना गौरव और बेड़ीको सुख समझूँगा। सनकूको अपने वचनके अनुसार किसी टापूका रावराजा न बना सका, तो पूरा वेतन तो कम से कम अवश्य ही दूँगा। उसे क्या मिलेगा, यह मैंने अपने विलमें साफतौरसे लिख दिया है। उसने जैसी सेवा की है उसके अनुसार तो यह कुछ नहीं। है परतु मेरी दरिद्रताके विचारसे वह बहुत कुछ है।" सनकूने बड़े अदबसे सलाम कर अपने मालिकका हाथ

चूम लिया। फिर पिंजरा उठाकर गाड़ी पर रख दिया गया।

किज्योतिने अपनेको गाडीपर टापेमे इस प्रकार बढ देख कहा—"मैंने बहादुरोंके बहुतेरे इतिहास पढे पर जादूमें फँसे बहादुरोंको इस तरह इतना धीरे धीरे जाते हुए न कहीं देखा, न सुना और न पढ़ा है। बहादुर तो बडी तेजीसे ले जाये जाते हैं। वह बादलोंमे लिपटकर या आगके रथपर या परदार घोडेपर या ऐसे ही किसी जानवरपर चलते हैं। बैलगाडीपर चलना बिलकुल नयी बात है। तलवारकी कसम मेरी समझमें कुछ नहीं आता है। आजकलके जादू और बहादुरी-की शायद यही चाल हो।

डौन फरनदूको डर था कि कहीं सनकू सारा भेद न खोल दे इसलिये उसने भठियारेको वायुवेग और गधेपर साज रख तुरत भेजने के लिये ताकीद की। भठियारेने भी फौरन हुक्मकी तामील कर दी।

पादडीने वायुवेगके एक ओर ढाल और दूसरी ओर चिल-मची लटका सनकूको गधेपर चढ जाने और वायुवेगकी लगाम पकड चलनेके लिये इशारा किया। दोनों छोकडियाँ और भठियारी कूचका डका बजनेके पहले किज्योतिको सलाम करने निकल उसके दुर्भाग्यपर टिसवे बहाने लगीं। इसपर

वह बोला—"कृपालु महिलाओं ! रोओ मत। प्रत्येक वीरको ऐसी-ऐसी घटनाओंका सामना करना पडता है। यदि ऐसा न होता, तो मैं अपनेको किसी कामका ही वीर न समझता। ऐसी-ऐसी विपत्तियाँ छोटे-मोटे वीरोंपर आती ही नहीं। क्योंकि उनकी कोई परवा नहीं करता है। साहसी वीरोंसे लोग ईर्षा करते, और उनसे पिंड छुडाना चाहते हैं। बस यही कारण है जिससे उनपर विपत्तियोंका पहाड टूट पडता है। खैर, तुम परमात्मासे प्रार्थना करो कि मैं जल्द इस जादूसे छुटकारा पाजाऊँ। यदि मैं कभी स्वाधीन हुआ, तो तुम्हारी कृपाओंको कभी न भूलूँगा।"

उधर तो किंज्योति उन्हें समझा रहा था और इधर पादडी और हज्जाम डौन फरनदू और दुरतियासे बिदा हो रहे थे। यह सब परस्पर मिले और बिछुडे। दुरतियाने कहा—"इसका क्या नतीजा निकलता है, इसकी खबर जरूर दीजियेगा।" पादडी और हज्जाम 'बहुत अच्छा' कह खच्चरों पर सवार हो गाडीके पीछे हो गये। दोनोंने मुँहोंपर नकाबें डाली ली थी, जिसमें किंज्योति न पहचान सके। इस प्रकार यात्रा आरम्भ हुई। सबसे आगे बैलगाडी पर किंज्योतिका पिंजरा था। उसके पीछे सनकू गधेपर घोडेकी लगाम पकडे हुए चला। उसके पीछे पादडी और हज्जाम अपने-अपने खच्चरपर बडी गभीरता-

से चलने लगे। किज्योति पिंजरेमे पैर फैलाये डडोंके सहारे झुका हुआ बैठा था। दोनों हाथ बँधे थे। वह चुपचाप था, मानो पत्थरका पुतला हो।

इस तरह धीरे धीरे चुपचाप वह लोग अंदाज दस मील चले गये। गाडीवानने बैलोंको चारा देनेका सुबीता देख ठहरना चाहा पर हज्जामने कहा—"यहाँ नहीं, आगे चलो। वहाँ पहाडीके पीछे सब बातोंका सुबीता है।" बस फिर सब आगे बढे।

पादडीने मुँह फेरा, तो देखा कि छ सात सवार आ रहे हैं। वह लोग दोपहर बितानेके विचारसे किसी सराय-की तलाशमें जल्दी-जल्दी डग उठाते चले आ रहे थे। पास पहुँचे तो उन्होंने विनयपूर्वक अभिवादन किया। उनमे एक मुखिया सा मालूम हुआ। वह वास्तव में टीलेडोके गिरजेका व्यवस्थापक था। यह विचित्र मडली देख उससे न रहा गया। किंज्योतिकी ओर सकेत कर पूछ ही बैठा—"इस मनुष्यको इस तरह क्यों ले जा रहे हैं? मैं समझता हूँ, यह कोई मशहूर डाकू या बदमाश है।" किंज्योति-ने यह सुन लिया था। उसने कहा—"यदि आप शौर्यशास्त्रके ज्ञाता हों, तो मैं अपनी दु खगाथाएँ सुना सकता हूँ। न हों तो मैं कष्ट करना नहीं चाहता।"

व्यवस्थापक—मैंने शौर्यशास्त्र संबंधी अनेकों पुस्तकें पढ़ी हैं। आप सुनावें, तो सानंद आपकी इतिवृत्ति सुनूँगा।

किंज्योति—अच्छा सुनिये। यह तो आप समझ ही गये होंगे कि मायावियोंने द्वेषभावसे मुझे इस पिंजरे में फँसा रखा है। सज्जन सद्गुणका जितना आदर नहीं करते, दुष्ट उससे अधिक उसका निरादर करते हैं। मैं अश्वारोही वीर हूँ। मैं अमरत्वके मंदिरमें अपना नाम लिखाऊँगा और मेरा आचरण भावी संतानोंके लिये आदर्श तथा दर्पण होगा।

कहीं बात न बिगड़ जाय, इसलिये पादरी बोल उठा—"लामनचाका वीर किंज्योति सच कहता है। मायावियोंकी मायामें ही इसकी यह दशा हुई है। इसमें इसका कुछ दोष नहीं। दोष है उन ईर्षालुओं का जो साहसादि सद्गुणोंसे सदा घृणा करते हैं।"

व्यवस्थापकने दोनों को एक ही प्रकार की बातें कहते सुना, तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह कुछ निश्चय न कर सका कि वास्तव में बात क्या है। उसके साथियोंकी समझमें भी कुछ न आया। पर सनकू क्यों चुप रहने लगा था। वह भी बोल उठा—"आप चाहे जो समझें, पर असल बात यह है कि मेरे मालिक किंज्योतिपर जादू का उतना ही असर है जितना मेरी नानीपर

है। इनका होसहवास दुरुस्त है। इस पिंजरे में वद होने के पहले जैसे खाते पीते थे, वैसे ही अब भी खाते पीते हैं। फिर आप ही कहिये, कैसे मालूम हो कि इनपर जादू हुआ है? सुना है, जिसपर जादू होता है वह न खाता है, न पीता है और न बोलता ही है। अगर कोई न रोके, तो मेरे मालिक अब भी तीन वैरिस्टरों के बराबर बोलेंगे।"

फिर पादडीकी ओर मुँहकर उसने कहा—"क्यों पादडीजी क्या आप समझते हैं कि मैं आपको न पहचान सका और आपकी चालें ही समझ सका। आप लोग अपने को चा जितना छिपाये रहे, पर मैं सब ताड गया हूँ। इसमें शक नही कि आप बडी उस्तादी से सब काम कर रहे हैं, पर मेरी आँखो धूल नही झोंक सकते। मै सब जानता और समझता हूँ। आ थोडेमें समझ ले कि जहाँ ईर्षा द्वेष है वहाँ सद्गुण नही ठह सकता। आपके मारे न तो मेरे मालिकका ब्याह मिकोमिकोना राजकुमारीसे हो पाया, और न मैं ही रावराजा बन सक अपनी सेवा और मालिककी उदारताके देखते इससे कम आशा ही न थी। लेकिन क्या करूँ। 'बदलता है रँग आस कैसे कैसे' जो कल अर्स पर थे आज फर्श पर आ गये हैं। अपनी जोडू और बच्चोंकी फिक्र है। वह सोचती होगी मेरा पति और लडके सोचते होगे कि हमारा बाप किसी

किसी टापूका लाट या राजा बनकर आता ही होगा, लेकिन यदा मोचीका मोची ही घर जा रहा है। पादड़ीजी ! यह मैंने इसलिये कहा है, जिसमें आपको मालूम हो जाय कि मेरे मालिकके दुर्भाग्यके बुलानेवाले आप ही हैं।"

हज्जामने कहा—"सनकू, मैं कसम खाकर कहता हूँ कि तू भी वैसा ही पागल है, जैसा तेरा मालिक। मैं समझता हूँ तुझे भी उसी पिंजरेमें रहनेकी जरूरत है। उसपर जैसा जादू है वैसाही तुझपर भी है। न मालूम किस बुरी घड़ीमें उसने द्वीप और टापूकी बातें तेरे सिरमें भर दी हैं।

सनकू बोला—"मैं गरीब हूँ सही, पर ईमानदार हूँ। मैं किसीका कुछ धारता नहीं। अगर मुझे टापूका लालच है, तो दूसरोंको इससे भी बुरी चीजोंका है। मनुष्य होनेके कारण मैं किसी टापूका राजा सहज ही हो सकता हूँ, विशेष कर इस-लिये कि मेरे स्वामी इतने टापू जीतेंगे कि वह अकेले सँभाल न सकेंगे। हज्जाम साहब ! आप भी होशियार हो जायँ। दाढ़ी बनाना ही सब कुछ नहीं है। एक आदमीसे दूसरेमें कुछ न कुछ फर्क होता ही है। मैं यह इसलिये कहता हूँ कि हम लोग परस्पर एक दूसरेको जानते हैं। तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते।"

हज्जाम चुप रह गया। कुछ नहीं बोला। उसने देखा कि जवाब देने से यह कहीं सारा भेद ही न खोल दे। पादड़ीने भी यही समझ व्यवस्थापकसे कहा कि चलिये मैं सब बातें बता दूँगा।

उन्नीसवाँ परिच्छेद

पादडीने अलग लेजाकर किज्योतिके पागलपनकी सारी कहानी व्यवस्थापकसे कह सुनायी। व्यवस्थापक विद्वान् था। उसे इन बातोंसे बडा अनुराग हो गया। वह दोनो बातें करते, जहाँ हज्जामने ठहरनेकी जगह बतायी थी वहाँ जा पहुँचे। वह दोनो वहीं ठहर गये। इतनेमें किज्योतिकी गाडी भी आ पहुँची। गाडीवानने बैल खोल दिये, और सब लोग झरनेके किनारे बैठकर खाने पीनेकी तैयारी करने लगे। सनकूने पादडीसे कहा कि मालिकको भी थोडी देर मैदानकी हवा खाने दीजिये।

पादडी—अगर वह भाग न जाय, तो मैं तुम्हारी बात मान सकता हूँ। अबके निकल भागा, तो पता लगाना कठिन होगा।

सनकू—नहीं भागेंगे। मैं जमानत करता हूँ।

व्यवस्थापक—यदि वह वीरोंकी तरह प्रतिज्ञा करे कि मैं न भागूँगा तो मैं भी जमानत करता हूँ।

किज्योति—मैं इस बातकी प्रतिज्ञा करता हूँ और बडी तत्परतासे करता हूँ। मैं जानता हूँ कि जिसपर मेरी तरह जादू होता है, वह जहाँ चाहे वहाँ नही जा सकता।

इसपर वह पिंजडेसे निकाला गया। उसने निकलते ही अँगडाई की, फिर वायुवेगके पास जा उसे थपथपाया और कहा—"खुश रहो। हम तुम फिर सडकपर साथ चलेगे।" इसके बाद जहाँ सब लोग खाने बैठे थे वहाँ आकर वह बैठ गया।

व्यवस्थापकने किंज्योतिके शौर्य सबधी विश्वासपर आक्षेप कर पूछा—"आप इन फालतू मनगढत बातो पर क्यो विश्वास करते हैं? आपसे प्रार्थना है, आप अच्छी अच्छी पुस्तके पढे और योग्यता प्राप्त करे।"

किंज्योति बडे ध्यानसे व्यवस्थापककी बाते सुन कुछ देर उसके मुँहकी ओर देखता रहा। फिर बोला—"महाशय, आपने जो कुछ कहा, उसका निचोड यही है न कि पहले बहादुर सवार नहीं होते थे और शौर्य सबधी पुस्तके कपोलकल्पित, हानिकारक, व्यर्थ और असत्य बातोसे परिपूर्ण हैं। मैंने उन्हें पढकर बुरा किया और उनपर विश्वास कर और भी बुरा किया। उनका अनुकरण कर अत्यत बुरा किया।

व्यवस्थापक—जी हाँ, मेरी तो ऐसी ही धारणा है।

किंज्योति—तो मैं समझता हूँ, आप पागल हैं। जिसे सारा ससार सच मानता है, उसे आप नहीं मानते। किसीको जैसे यह समझाना कि सूरजसे रोशनी नहीं होती, पालेसे

सर्दी नहीं होती और पृथ्वीसे अन्न नहीं होता है, वैसे ही आपका यह कहना है कि वीरोंने कभी कोई दुस्साहसिक कर्म नहीं किया। किंतु इतिहास इन बातोंसे भरे हुए हैं।

इसके बाद क्रिज्योतिने बड़े बडे महाकाव्योंके वीरों और इँगलैंड, फ्रांस, जरमनीके प्रसिद्ध प्रसिद्ध शूर महाराजोंका वर्णन कर व्यवस्थापकको आश्चर्य चकित कर दिया। वह उसकी जानकारी देखकर दाँतों उँगली काट रह गया। क्रिज्योतिने उपन्यासों और इतिहासोंके वीरोंकी खिचडी पका डाली,तो वह और भी घबराया। क्रिज्योतिकी बातोंमें सत्यांश है, यह व्यवस्थापकको भी मानना पडा।

क्रिज्योति फिर कहने लगा—"मैं अपने बारेमें कहता हूँ, जबसे मैं बहादुर सवार हुआ, तबसे मैं साहसी, उदार, सुशिक्षित, विनम्र, सुशील, धीर, निर्भय, संतोषी और सहनशील हो गया हूँ। कैद और आफतोंकी परवा नही है। इसके सिवा मुझे अब भी सम्राट् हो जानेकी आशा है। सम्राट् हुए विना कृतज्ञता प्रकट न कर सकूँगा। मैं सच कहता हूँ, दरिद्र चाहे कितना भी उदार क्यों न हो उदारता नही दिखा सकता है। इसलिये मैं सम्राट् बनना चाहता हूँ। फिर मैं मजेमें अपने मित्रोंका, विशेषकर सनकूका, हित कर सकूँगा। यह बिचारा बडा ही ईमानदार है। मैं इसे रावराजा बनाया चाहता हूँ। मैं इस बातकी

प्रतिज्ञा कर चुका हूँ। पर इसे शासन करनेकी योग्यता नहीं है।"

सनकू अपने मालिकका अतिम वाक्य सुन बोला उठा—"आप किसी तरह मुझे रावराजा बना दे, फिर योग्यताका अभाव न होगा। मान लीजिये, मुझमें योग्यता नही है, पर ऐसे आदमी भी तो हैं, जिन्हें राज्यका इजारा दे दिया जाता है, और वह राजाको सालाना कुछ दे देते हैं। और राज्यका सब भार अपने ऊपर ले लेते हैं। राजा मजेमे पैर फैलाकर सोता और जो कुछ सालमे पाता उससे मौज उडाता, पर सिर नही थकाता है। मै भी यही करूँगा। सालाना लगान पा रईसकी तरह मजा उडाऊँगा और दुनियाकी जरा भी परवा न करूँगा।"

व्यवस्थापक—सनकू भैया! यह तो लगानका मजा हुआ पर राजाओंको न्याय शासन भी स्वय ही देखना पडता है। इसके लिये बडी समझ और विशेषकर सदिच्छाकी आवश्यकता होती है। यदि आरभमें ही इनका अभाव हुआ, तो बस अत भी सदा त्रुटिपूर्ण ही होगा।

सनकू—मैं आपका सिद्धात नहीं समझता। में तो बस राजा होना चाहता हूँ। इसलिये जो पसद आता है, वही करता हूँ और करूँगा। और कुछ नहीं जानता, जो चाहता हूँ वह होना

चाहिये । बस उतने सेही मैं सतुष्ट हो जाऊँगा। सतुष्ट होजाने पर फिर कोई चाह नहीं रहती। जब चाह न रही तो बस उसका अत हो गया।

व्यवस्थापक—कोई सिद्वात बुरा नही है, सनकू ! परतु राज्यके सबधमें और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है।

इतनेमें खाना तैयार हो गया। बस बातचीत भी बद होगयी। व्यवस्थापक पर सनकूकी सरलताका जितना प्रभाव पडा उतना ही किंज्योतिके पागलपनका भी पडा।

भोजन और विश्रामके बाद व्यवस्थापकने अपनी राह ली और किज्योतिने भी पिजरे में फिर प्रवेश किया। बस फिर गाडी भी चल पडी।

छठे दिन सब लोगोंने दोपहरके समय किज्योतिके ग्राममे प्रवेश किया। उस दिन रविवार था। इसलिये ठलुआपथी बाजार में इधर उधर खडे थे। उनके ही बीचसे उसकी गाडी निकली। तमाशाइयोंकी भीड लग गयी। किंज्योतिको विचित्र अवस्थामें देख, सब हैरान थे। एक लौंडा किंज्योतिकी भतीजी-को खबर देने बेतहाशा दौड गया। घर पर कुहराम मच गया। इतने में गाडी भी आ पहुँची।

किज्योतिकी अवाई सुन सनकूकी स्त्री भी आ धमकी। उसे मालूम था कि वह किज्योतिके साथ गया है। उसने

सनकूको देखते ही पूछा—"कहो गधा तो मजे में है न ?" सनकू बोला—"वह मुझसे भी अच्छा है।"

सनकूकी स्त्री—भगवान् की कृपा है, जो वह अच्छा है। पर यह तो बताओ मुसाहबी में क्या क्या पाया ? मेरे लिये कैसी चोली लाये ? बच्चोंके लिये कैसे जूते लाये ?

सनकू—मेरी प्यारी ! यह सब तो कुछ नहीं लाया। हाँ इनसे बढ़कर चीजें लाया हूँ।

स्त्री—तो दिखा दो। मैं तुम्हारे बिना बड़ी दुःखी हो रही थी। दिखा दो तो खुश हो जाऊँगी।

सनकू—अभी ठहरो। घर पर दिखाऊँगा। मैं जल्दी ही दूसरे सफर में जानेवाला हूँ। अगर गया, तो टापूका राजा होकर आऊँगा। ऐसे वैसे टापूका नहीं बड़े भारी टापूका। थोड़े ही दिनों में तुम्हे लोग हुजूर और सरकार कहेंगे।

स्त्री—प्यारे ! हुजूर, सरकार, टापूका क्या मतलब है।

सनकू—मेरी प्यारी ! थोड़े ही दिनोंमे सबका मतलब आप ही समझ जाओगी। मैं सच कहता हूँ। ईमानदारोंके लिये बहादुरोंकी मुसाहबीसे बढकर कुछ नही है। यह सच है कि कुछ ऐसी मुहीमें हैं, जो मनके मुआफिक नहीं होती। सौ में निन्नानवे अच्छे फैंडे नही उतरतीं। यह मैं तजर्बे से जानता हूँ। कभी कम्मल पर उछाला गया। कभी डडे खाये।

तो भी उसकी आशा घनी ही है। बड़ा आनंद है। कभी पहाड़ोंको लाँघना, कभी जंगलों की खाक छानना, कभी चट्टानोंपर चलना, कभी क़िलो को जाँचना, कभी सरायों में दाम दिये विना मन आवे सो करना।

इधर सनकू दोनों प्राणी बातें कर रहे थे, उधर भतीजी और गृहरक्षिका ने किज्योतिका स्वागत कर कपड़े उतारे और उसके पुराने कमरेमें उसे लिटा दिया। वह तिरछी नजर से उन्हें देखता, पर बोलता कुछ नहीं। उसकी समझमें न आता था कि मैं कहाँ हूँ और यह दोनों कौन हैं।

पादड़ीने भतीजी से कहा—"सावधान रहना। देखना फिर न निकल जाय। न मालूम किस कठिनाईसे अबके फँसा लाया हूँ।"

हम भी अब किज्योतिको यहीं छोड़ देते हैं।

इति।
